Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَ لَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ۚ حَتّٰٓى اِذَا حَضَرَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ اِنِّيْ تُبْتُ الْـٰٔنَ وَ لَا الَّذِيْنَ يَمُوْتُوْنَ وَ هُمْ كُفَّارٌ

(सूरत आले-इम्रान आयत :130)

अनुवाद: और उन लोगों की कोई तौब: नहीं जो बुराइयां करते हैं यहां तक कि उन में से जब किसी को मृत्यु आ जाए तो वह कहता है मैं अब जरूर तौब: करता हूं और न उन लोगों की तौब: है जो इस अवस्था में मर जाते हैं कि कुफ्फार हों।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 5

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 29

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

24 ज़विल क़अदह 1441 हिजरी कमरी 16 वफा 1399 हिजरी शमसी 16 जुलाई 2020 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

जो इस्लाम की इज़्ज़त और ग़ैरत नहीं करता चाहे वह कोई हो ख़ुदा को इस की इज़्ज़त और ग़ैरत की परवाह नहीं होती और वह धार्मिक मुसलमान नहीं।

ख़ुदा की बातों को तुच्छ मत समझो और उन लोगों को रहम के योग्य समझो जिन्होंने द्वेष की वजह से हक़ का इनकार कर दिया और कह दिया कि अमन के ज़माना में किसी के आने की क्या ज़रूरत है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समर्थन व सहायता के बारे में एक महान पेशगोई

फ़रमाया: अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम में एक सूरत भेज कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क़दर और मर्तबा प्रकट किया है और वह सूरत है। اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ (अलफ़ील:2) यह सूरत इस हालत की है कि जब सरवरे कायनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मसीबतें और दुख उठा रहे थे। अल्लाह तआला इस हालत में आप को तसल्ली देता है कि मैं तेरा सहायक तथा मदद करने वाला हूँ।

इस में एक महान पेशगोई है कि क्या तूने नहीं देखा कि तेरे रब ने अस्हाबुल फ़ील (हाथी वालों) के साथ क्या-किया? अर्थात इनका कोशिशें उलटा कर उन पर ही मारी और छोटे छोटे जानवर उन के मारने के लिए भेज दिए। इन जानवरों के हाथों में कोई बंदूक़ें न थीं बल्कि मिट्टी थी। सजील भीगी हुई हुई मिट्टी को कहते हैं। इस सूरत शरीफा में अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ाना काबा क़रार दिया है और अस्हाब अलफ़ील की घटना को पेश करके आप की सफलता और समर्थन और सहायता की पेशगोई की है।

अर्थात आपकी सारी कार्रवाई को बर्बाद करने के लिए जो सामान करते हैं और जो कोशिश करते हैं उनके तबाह करने के लिए अल्लाह तआला उनकी ही चेष्टाओं को और कोशिशों को उलटा कर देता है। किसी बड़े सामान की ज़रूरत नहीं होती। जैसे हाथी वालों को चिड़ियों ने तबाह कर दिया ऐसा ही यह पेशगोई क़यामत तक जाएगी। जब कभी कोई अस्हाबुल फ़ील पैदा होगा तब ही अल्लाह तआला उन के तबाह करने के लिए उनकी कोशिशों को मिट्टी में मिला देने के सामान कर देता है।

पादरियों का नियम यही है। इन की छाती पर इस्लाम ही पत्थर है वर्ना बाक़ी समस्त धर्म उन के नज़दीक नामर्द हैं। हिंदू भी ईसाई हो कर इस्लाम के ही रद्द में किताबें लिखते हैं।रामचन्द्र और ठाकुरदास ने इस्लाम के रद्द में अपना सारा ज़ोर लगा कर किताबें लिखी हैं। बात यह है कि उनका कांशनस कहता है कि इन की हलाकत इस्लाम ही से है। तिब्बी तौर पर भय उनका ही पड़ता है जिनके द्वारा हलाकत होती है। एक मुर्ग़ी का बच्चा बिल्ली को देखते ही चिल्लाने लगता है। इसी तरह पर विभिन्न दर्मों के अनुयायी प्राय और पादरी विशेष रूप से जो इस्लाम के रद्द में ज़ोर लगा रहे हैं यह इसीलिए है कि इन को विश्वास है।अंदर ही अंदर उनका दिल उन को बताता है कि इस्लाम ही एक मज़हब है जो झूठे धर्मों को पीस डालेगा।

अहमदियत के द्वारा इस्लाम की प्रतिरक्षा

इस वक़्त अस्हाबुल फ़ील की शक्ल में इस्लाम पर हमला किया गया है।मुसलमानों की हालत में बहुत कमज़ोरियाँ हैं। इस्लाम ग़रीब है और असहाबे फ़ील ज़ोर में हैं मगर अल्लाह तआला वही नमूना फिर दिखाना चाहता है। चिड़ियों से वही काम लेगा। हमारी जमाअत उन के मुक़ाबला में क्या है। इन के इत्तिफ़ाक़ और ताक़त और दौलत के सामने नाम भी नहीं रखते लेकिन हम अस्हाबुल फ़ील की घटना सामने देखते हैं कि कैसी तसल्ली की आयतें नाज़िल फ़रमाई हैं। मुझे भी यही इल्हाम हुआ है जिससे साफ़ साफ़ पाया जाता है कि ख़ुदा तआला की सहायता और समर्थन अपना काम करके रहेगी। हाँ इस पर वही यक़ीन रखते हैं जिनको क़ुरआन से मुहब्बत है। अगर क़ुरआन से मुहब्बत नहीं, इस्लाम से प्रेम नहीं, वे इन बातों की कब परवाह कर सकता है। इस्लाम और ईमान यही है कि ख़ुदा की राय से राय मिलाए। जो इस्लाम की इज़्ज़त और ग़ैरत नहीं करता चाहे वह कोई हो ख़ुदा को इस की इज़्ज़त और ग़ैरत की परवाह नहीं होती और वह धार्मिक मुसलमान नहीं। ख़ुदा की बातों को तुच्छ मत समझो और उन लोगों को रहम के योग्य समझो जिन्होंने द्वेष की वजह से हक़ का इनकार कर दिया और कह दिया कि अमन के ज़माना में किसी के आने की क्या ज़रूरत है। अफ़सोस उन पर। वह नहीं देखते कि इस्लाम किस तरह दुश्मनों के घेरा में फंसा हुआ है। चारों तरफ़ से इस पर हमला पर हमला हो रहा है। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अपमान किया जाता है। फिर भी कहते हैं कि किसी की ज़रूरत नहीं।

क़ानून सडीशन से इस्लाम ही लाभ उठा सकता है

क़ानून सडीशन हमारे लिए बहुत लाभदायत है। सिर्फ हम ही फ़ायदा उठा सकते हैं। दूसरे मज़हबों को हलाक करने लिए यह भी एक माध्यम होगा। क्योंकि हमारे पास तो हक़ायक़ और मआरिफ़ के खज़ाने हैं। हम उनका एक ऐसा सिलसिला जारी रखेंगे जो कभी ख़त्म न होगा मगर आर्या या पादरी कौन से मआरिफ़ पेश करेंगे। पादरियों ने पिछले पचास साल के अन्दर क्या दिखाया है। क्या गालियों के सिवा वह और कुछ प्रस्तुत कर सकते हैं जो भविष्य में करेंगे ,हिन्दुओं के हाथों में भी एतराज़ों के सिवा और कुछ नहीं है हम दावा से कहते हैं कि अगर किसी आर्या या पादरी को अपने मज़हब के कमाल और खूबियां वर्णन करने के लिए बुलाया जाए तो वह हमारे मुक़ाबला में एक क्षण भी न ठहर सके।

19 जनवरी 1898 ई

कफ़्फ़ारा

मज़हब की पहली ईंट ख़ुदा तआला को पहचानना है। जब तक वह ठीक न हो दूसरे कर्म कैसे पाक हो सकते हैं। ईसाई दूसरों की पाक बातिनी पर बड़े एतराज़ किया करते हैं और शर्म को समाप्त करने वाले कफ़्फ़ारा का अख़लाक़ वाला मसला मान कर एतराज़ करते हैं। मेरी समझ में यह बात नहीं आती कि जब कफ़्फ़ारा का अक़ीदा हो तो अल्लाह तआला की पूछताछ का ख़ौफ़ कैसे हो सकता है? क्या यह सच नहीं है कि हमारे गुनाहों के बदले मसीह पर सब कुछ वारिद हो गया। यहां तक

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ का यूरोप का सफर, सितम्बर अक्तूबर 2019 ई (भाग-11)

इमाम जमाअत अहमदिया एक सम्मान वाले व्यक्तित्व के मालिक हैं और बड़े हमदर्द हैं, उनकी तक़रीर बहुत मुफ़ीद और सोचने पर मजबूर करती है

(Eaubonne के मेयर Gregoire Dubinot साहिब)

इमाम जमाअत अहमदिया अमन का पैकर हैं,ख़लीफ़ा एक ग़ैरमामूली शख़्सियत हैं, अमन फैला रहे हैं और आपका इलम भी बहुत ही व्यापक है।

(UNESCO में Mali के एंबेसडर Oumar Keita साहिब)

अगर दुनिया में वह इस्लाम स्थापित हो जो इमाम जमाअत अहमदिया प्रस्तुत कर रहे हैं तो दुनिया के सब मसाइल ख़त्म हो जाऐंगे, जब दूसरों की भावनाओं का सम्मान होगा तो हर स्थान पर अमन स्थापित होगा

(फ्रांस में माली से सम्बन्ध रखने वाले कैथोलिक लोगों की एसोसिएशन के सदर Guillaume Diallo साहिब)

इमाम जमाअत अहमदिया वास्तविक इस्लाम की बात करते हैं जो पुरअमन और बर्दाश्त की शिक्षा देने वाला है

(नेटो मैमोरियल के सदर Mr Brenton साहिब

हुज़ूर अनवर का ज्ञान वर्धक ख़िताब सुनने के बाद सम्मान्नीय मेहमानों के ईमान को बढ़ाने वाले विचार, प्रैस कान्फ्रैंस

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

8 अक्तूबर 2019 ई(दिनांक मंगलवार)

मेहमानों के विचार

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के आज के ख़िताब का मेहमानों पर गहरा प्रभाव हुआ। कई मेहमानों ने स्पष्ट रूप से इस को प्रकट किया

Eaubonne के मेयर Gregoire Dubinot ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा: इमाम जमाअत अहमदिया एक पर सम्मान वाली शख़्सियत के मालिक हैं और बड़े हमदर्द हैं। उनकी तक़रीर बहुत लाभदायक और सोचने पर मजबूर करती है। यह इमाम जमाअत अहमदिया की हिक्मत पर दलालत करती है और यह हिक्मत इमाम जमाअत आगे फैलाना चाहते हैं। उनकी तक़रीर से इन्सानी हमदर्दी झलक रही थी।

माली से UNESCO के एंबेसडर उम्र कावता साहिब ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा: इमाम जमाअत अहमदिया अमन का पैकर हैं और UNESCO वह बेहतरीन स्थान है जहां अमन के बारे में बातचीत हो सकती है। हमें इस अमन को पूरी दुनिया में फैलाना चाहिए।

जमाअत अहमदिया हमारे देश माली में सन 1987 ई से मौजूद है और हमारे देश की बेहतरी के काफ़ी काम कर रही है और दोस्ताना तरीक़ा से हमारी क़ौम के साथ मिलकर काम कर रही है।

इमाम जमाअत अहमदिया से मुलाक़ात कर के बहुत ख़ुशी हुई। आप एक व्यापक दृष्टिकोण वाले शख़्सियत हैं और अमन की स्थापना के लिए कोशिश कर रहे हैं और यही वह चीज़ है जिसकी उम्मत मुस्लिमा को ज़रूरत है। विश्वव्यापी इन्साफ़ और भाईचारा की जो धारणा इमाम जमाअत प्रस्तुत करते हैं, दुनिया को इस की बहुत ज़रूरत है।

फ्रांस में माली से सम्बन्ध रखने वाले कैथोलिक लोगों की एसोसीएशन के सदर Guillaume Diallo अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहते हैं: मैं पहले से अहमदियों के बारे में जानता था। समस्त धर्मों को यह पैग़ाम दूसरों तक पहुंचाना चाहिए। हम भी वही अमन का पैग़ाम दूसरों तक पहुंचा रहे हैं। हम भी inter religious dialogue के लिए कोशिश कर रहे हैं

अगर दुनिया में वह इस्लाम स्थापित हो जो इमाम जमाअत अहमदिया प्रस्तुत कर रहे हैं तो दुनिया की सब समस्ताएं ख़त्म हो जाऐंगी। जब दूसरों की भावनाओं का सम्मान होगा तो हर स्थान पर अमन स्थापित होगा। आपसी सम्मान की बड़ी ज़रूरत है। हम में से प्रत्येक अपने अपने धर्म पर स्थापित है लेकिन हमारा एक साझा अक़ीदा है और वह अल्लाह की हस्ती है।

नेटो मैमोरियल के सदर Mr Brenton कहते हैं: इस आयोजन में शामिल हो कर बहुत ख़ुशी हुई। यह कान्फ्रैंस अहम और तारीख़ी थी। इस से अमन, भाईचारा और बराबरी स्थापित हो सकती है। मेरी इच्छा है कि अधिक से अधिक लोग इमाम जमाअत अहमदिया के पैग़ाम को सुनें। इमाम जमाअत अहमदिया वास्तविक इस्लाम की बात करते हैं जो पुरअमन और बर्दाश्त की शिक्षा देने वाला है। यह पैग़ाम शिद्दत पसन्दों के अनुकरण से बिलकुल विभिन्न है। इमाम जमाअत अहमदिया यहां अमन के पैग़ाम को बढ़ावा देने के लिए बहुत कोशिश कर रहे हैं। यह एक ज़रूरी काम है और हम भी उनकी मदद करने के लिए तैय्यार हैं।

हम में से प्रत्येक को अमन स्थापित करने की कोशिश करनी चाहिए यह काम हर-सतह पर करना चाहिए और इस के लिए अपना अनुकरणी नमूना प्रस्तुत करना चाहिए

फ्रांस में एक फ़लाही संस्था की डायरेक्टर भी इस प्रोग्राम में शरीक थीं। यह अपने विचारों को वर्णन करते हुए कहती हैं कि हमारी संस्था अस्पतालों के लिए फ़ंडज़ इकट्ठे करती है। यहां मुझे एक अहमदी औरत ने आने की दावत दी। यह औरत हमारे साथ फ़लाही कामों में काफ़ी सहयोग करती हैं। मुझे आपके ख़लीफ़ा से मिलकर बहुत ख़ुशी हुई है। आपने जो शिक्षा के हवाला से बात की है, यह बहुत शानदार है। प्रत्येक को ज्ञान प्राप्त करने के बराबर अवसर होने चाहिऐं। यह पैग़ाम बहुत अहम है। इसके अतिरिक्त दुनिया को अमन की ज़रूरत है। मेरे विचार में अमन को कई तरीक़ से बढ़ावा दिया जा सकता है और हम सब इस में अपना-अपना हिस्सा डाल सकते हैं जैसे चैरिटी का काम कर के, आप जैसी पुरअमन जमाअत के साथ मिलकर काम कर के,आप लोग जो अमन के लिए काम कर रहे हैं, इस में आप लोगों की मदद कर के हम अमन स्थापित करने में हिस्सा डाल सकते हैं। आप लोग स्कूलज़, हस्पताल इत्यादि बना रहे हैं, पानी उपलब्ध कर रहे हैं उनमें आप लोगों की मदद की जा सकती है। इन समस्त बातों के बारे में आज सुनने को मिला है। यह बहुत अच्छे इक़दामात हैं। इस आयोजन में बुलाने करने का शुक्रिया।

फ्रांस की एक इन्सानी अधिकार की फ़ैडरेशन के मैंबर भी इस प्रोग्राम में शरीक थे। उन्होंने अपने भावनाओं का इज़हार करते हुए कहा कि मेरे बहुत से साथी यूरोप में ग्रुप की सूरत में इन्सानी अधिकार के हवाला से काम कर रहे हैं। मुझे यहां आकर बहुत ख़ुशी हुई है। हमारी टीम में ऑस्ट्रिया से एक दोस्त भी शामिल है, जो आपके साथ भी काम करता है। इस से यहां मुलाक़ात हुई है। आपके ख़लीफ़ा की तक़रीर बहुत अच्छी और बहुत गहरी थी। आपने बड़े विस्तार से ज्ञान की ज़रूरत और ज्ञान के बढ़ावा के लिए किए जाने वाले इक़दामात का ज़िक्र किया है ज्ञान की तारीख़ में इस्लाम की सेवाएं भी गिंवाई हैं। यह बहुत दिलचस्प मालूमात थीं। मेरी नज़र में अमन इन्सान के अपने दिल से शुरू होता है, अपने घर से शुरू होता है हमें अपनी फ़ैमिलियों को ज्ञान उपलब्ध करवाना चाहिए।

सिटी कौंसल के एक मैंबर भी इस प्रोग्राम में शामिल थे। यह अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहते हैं मैं कौंसल में विभिन्न नस्लों के मध्य मतभेद के ख़िलाफ़ काम करने वाले विभागों का इंचार्ज हूँ। मैं ख़लीफ़ा के इस प्रोग्राम में शिरकत करने के लिए आया हूँ। आपके इमाम की बातें सुनकर बहुत अच्छा लगा है। विशेषकर जो आपने औरतों को ज्ञान के बराबरी अवसर उपलब्ध करने की बात की है। धर्मों के मध्य में भाईचारा बहुत ज़रूरी है। आपने अफ्रीक़ा के पिछले इलाक़ों में शिक्षा और सेहत के हवाला से शुरू किए जाने वाले प्रोजेक्ट्स का वर्णन किया है। आम तौर पर जब फ्रांस या अन्य देशों में इस्लाम की बात होती है तो विभिन्न शंकाओं का वर्णन होता है, समाज में एक इस्लामोफोबिया है। ऐसे में इस्लाम के बारे में सकारात्मक बातें सुनने को मिली हैं। मुझे बहुत ख़ुशी है। मेरा एक दोस्त अहमदी है इसलिए मेरी इच्छा थी कि मैं यहां आऊँ और देखूं कि आपकी जमाअत क्या है और कैसे काम करती है

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

सहाबा किराम की आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से यह मुहब्बत थी ,यह इशक़ था जिसके कारण से उनको अपनी जानों की पर्वा नहीं थी

अश्रा मुबश्रा में शामिल आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के महान बदरी

सहाबा हज़रत सईद बिन ज़ैद

और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ी अल्लाह अन्हुमा के प्रशंसनीय गुणों का वर्णन।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 12 जून 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक़ इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज जिन सहाबा रज़ि का मैं ज़िक्र करूँगा उनमें से एक हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि हैं। हज़रत सईद रज़ि के पिता का नाम ज़ैद बिन अमरो और माता का नाम फ़ातिमा बिन्त बअजह था। उनका सम्बन्ध क़बीला अदी बिन काब बिन लुई से था। हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि की कुनिय्यत अबुल अवर थी जबकि कुछ ने अबू सौर भी वर्णन की है। उनका क़द लंबा, रंग गंदुमी और बाल घने थे। यह हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि के चचेरे भाई थे। उनकी वंशावली चौथी नस्ल पर नफील पर जा कर हज़रत उमर रज़ि से मिलती है जबकि आठवीं पुश्त पर कअब बिन लुई पर जा कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मिलती है

(उसदुल ग़ाबह भाग 2 पृष्ठ 476 सईद बिन ज़ैद दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2003 ई)

(अत्तबकातुल कुब्रा भाग 3 पृष्ठ 292 -294 सईद बिन ज़ैद वमन बनी अदी बिन काब बिन लुई। दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

(उद्धरित रोशन सितारे ग़ुलाम बारी सैफ भाग 2 पृष्ठ 155)

हज़रत सईद रज़ि की बहन आतका की शादी हज़रत उमर रज़ि से और हज़रत उमर रज़ि की बहन फ़ातिमा की शादी हज़रत सईद रज़ि से हुई थी और यह वही बहन हैं जो हज़रत उमर रज़ि के इस्लाम कुबूल करने का कारण भी बनें। हज़रत सईद रज़ि के पिता ज़ैद बिन अमरो ज़माना जाहिलियत में एक ख़ुदा की इबादत किया करते थे और हज़रत इब्राहीम के धर्म की तलाश किया करते थे और कहा करते थे कि जो हज़रत इब्राहीम का उपास्य है वही मेरा उपास्य है और जो इब्राहीम का धर्म है वही मेरा धर्म है।

(उसदुल ग़ाबह भाग 2 पृष्ठ 476 सईद बिन ज़ैद दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2003 ई)

(उसदुल ग़ाबह भाग 2 पृष्ठ 368ज़ैद बिन अम बिन नुफ़यल दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2003 ई)

इस ज़माना में भी मुवह्हिद मौजूद थे। कुछ बच्चे भी सवाल कर देते हैं कि इस्लाम से पहले आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क्या धर्म था? किस की इबादत करते थे ?तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो सबसे बढ़कर मुवह्हिद थे और वह भी एक ख़ुदा की इबादत किया करते थे।

ज़ैद बिन अमरो हर किस्म के दुराचार यहां तक कि मुशरिकीन के ज़बीहा से भी बचा करते थे। एक बार नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से उनकी मुलाक़ात आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बिअसत से पहले हुई जिसकी तफ़सील सही बुख़ारी में यूं वर्णन हुई है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमरो रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़ैद बिन अमरो बिन नुफ़यल से बलदह मुक़ाम के नीचे मिले इस से पहले कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर वह्य उत्तरी थी अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नबुव्वत के दावे से पहले की बात है। बलदह मक्का से पश्चिम की तरफ़ एक वादी का नाम है, मक्का की तरफ़ जाते हुए तनईम के रास्ते में है। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने दस्तर ख़वान रखा गया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने खाने से इन्कार कर दिया। ज़ैद ने कहा कि मैं भी इस से नहीं खाया करता जो तुम अपने थानों में ज़बह करते हो और मैं सिर्फ वही खाता हूँ जिस पर अल्लाह का नाम लिया जाए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस एहतियात के तक़ाज़े के तहत नहीं खाया कि ग़ैर अल्लाह के नाम प्रिय चीज़ें ज़बह की गई हैं। इस पर ज़ैद ने भी कहा कि मैं भी ग़ैर अल्लाह के नाम पर ज़िब्ह की हुई चीज़ें नहीं खाता। और फिर रिवायत आगे चलती है कि ज़ैद बिन अम्रो क़ुरैश की क़ुर्बानियों को बुरा समझा करते थे और कहते थे कि बकरी को भी अल्लाह तआला ने पैदा किया है और आसमान से इस के लिए पानी बरसाया और ज़मीन से इस के लिए चारा उगाया। फिर तुम उस को अल्लाह के सिवा औरों के नाम पर ज़िब्ह करते हो। अर्थात इस ग़ैर अल्लाह के नाम पर ज़िब्ह करने को बुरा मनाया करते थे और इस को बहुत बड़ा गुनाह समझते थे

(सही अलबख़ारी किताब फ़ज़ाइल मनाक़िब अल-अन्सार बाब हदीस ज़ैद बिन उमरो बिन नुफ़यल हदीस 3626) (फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 61 ज़व्वार अकेडमी कराची 2003 ई)

ज़ैद बिन अम कुफ़्र तथा शिर्क से दूर हुए तो उन्होंने हक़ की तलाश में दूर दूर देशों का सफ़र किया। इन के इस सफ़र के बारे में सही बुख़ारी की एक और रिवायत में यूं वर्णन हुआ है

हज़रत इब्ने उमर रिवायत करते हैं कि ज़ैद बिन अमरो बिन नुफ़यल शाम के मुल्क की तरफ़ धर्म के बारे में पता करने के लिए गए ताकि इस की पैरवी करें। अत: वह एक यहूदी आलिम से मिले जिससे उन्हों ने उन के धर्म के बारे में पूछा। उन्होंने कहा , यहूदी आलिम से पूछा कि मुझे बताएं शायद मैं तुम्हारा धर्म धारण कर लूं। तो उसने कहा कि हमारे मज़हब पर न होना ये तो बिगड़ चुका है वर्ना तुम भी अल्लाह तआला के ग़ज़ब से अपना हिस्सा लोगे। ज़ैद ने कहा मैं तो अल्लाह के ग़ज़ब से भाग रहा हूँ और मैं तो अल्लाह की नाराज़गी को कभी बर्दाश्त नहीं करूँगा और मैं इस की ताक़त कहाँ रखता हूँ। फिर उन्होंने पूछा कि क्या तुम मुझे उस के इलावा किसी धर्म का पता देते हो? इस यहूदी आलिम ने कहा कि मैं तो यही जानता हूँ कि इन्सान हनीफ़ हो। ज़ैद ने कहा हनीफ़ क्या होता है? उसने कहा कि इब्राहीम का धर्म। न वह यहूदी थे न इसाई और वह सिर्फ़ अल्लाह ही की उपासना करते थे। फिर ज़ैद वहां से निकले और ईसाई धर्म के एक आलिम से मिले इस से भी यही ज़िक्र किया। उसने कहा कि तुम हमारे मज़हब पर कभी न होना वर्ना तुम अल्लाह की लानत से अपना हिस्सा लोगे। ज़ैद ने कहा कि मैं अल्लाह की लानत से भाग रहा हूँ और मैं अल्लाह की लानत और ना उस का ग़ज़ब बर्दाश्त कर सकता हूँ और मुझे यह ताक़त ही कहाँ है। क्या तुम मुझे किसी और धर्म का पता देते हो? उसने कहा कि मैं यही जानता हूँ कि इन्सान हनीफ़ हो। ज़ैद ने पूछा यह हनीफ़ क्या होता है? उसने कहा इब्राहीम का धर्म। न वह यहूदी थे न इसाई और सिर्फ अल्लाह की इबादत करते थे। जब ज़ैद ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से बारे में उनकी राय देखी तो वह वहां से निकले। जब बाहर मैदान में आए तो उन्होंने अपने दोनों हाथ उठाए और कहा हे मेरे अल्लाह मैं यह इक़रार करता हूँ कि मैं हज़रत इब्राहीम के धर्म पर हूँ।

(सही अलबख़ारी किताब फ़ज़ाइल मनाक़िब अल-अनसार बाब हदीस ज़ैद बिन उमररो बिन नुफ़यल हदीस 3627)

ज़ैद बिन अम्रो ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ज़माना पाया मगर आपकी बिअसत से पहले वफ़ात पा गए थे। हज़रत आमिर बिन रबीअ रज़ि

वर्णन करते हैं कि ज़ैद बिन अमरो धर्म की तलाश में रहे और उन्होंने ईसाइयत और यहूदियत और बुतों और पत्थरों की उपसाना से घृणा का इज़हार किया और उन्होंने अपनी क़ौम से मतभेद किया और उनके बुतों और जिनकी उनके पूर्वज इबादत किया करते थे उनको छोड़ देने का इज़हार किया। और न ही वो उनका ज़बीहा खाते थे। एक-बार उन्होंने मुझे कहा कि हे आमिर देखो मुझे अपनी क़ौम से मतभेद है। मैं इब्राहीमी मिल्लत की पैरवी करने वाला हूँ और जिसकी वह इबादत किया करते थे अर्थात इब्राहीम अलैहिस्सलाम और इस के बाद इसमाईल का अनुकरण करता हूँ जो इसी क़िबले की तरफ़ नमाज़ पढ़ते थे और मैं इस्माईल की नस्ल से एक नबी का मुंतज़िर हूँ लेकिन यूं मालूम होता है कि मुझे उस का ज़माना नसीब नहीं होगा कि इस की तसदीक़ करूँ और इस पर ईमान लाऊँ और गवाही दूं कि वह सच्चा नबी है। हे आमिर अगर तुम इस नबी का ज़माना पाओ तो उसे मेरा सलाम कहना। आमिर कहते हैं कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ज़हूर हुआ तो मैं मुस्लमान हो गया और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ज़ैद बिन अमरो का पैग़ाम दिया और सलाम अर्ज़ किया। हज़ूर ने सलाम का जवाब दिया और उनके लिए रहमत की दुआ की और फ़रमाया मैं ने इस को जन्नत में इस तरह देखा कि वह अपने दामन को समेट रहा था

(उद्धरित रोशन सितारे ग़ुलाम बारी सैफ भाग 2पृष्ठ 156)

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 290 सईद बिन ज़ैद दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

ज़ैद बिन अम को अपने मववहिइदु होने पर निहायत फ़ख़र था। हज़रत असमा बिन्त अबूबकर ज़माना जाहिलीयत की एक घटना वर्णन करती हैं कि मैंने ज़ैद बिन अम्रो बिन नुफ़यल को देखा कि काबा से अपनी पीठ लगाए खड़े यह कह रहे थे कि हे क़ुरैश के लोगो अल्लाह की क़सम! तुम में से कोई भी मेरे सिवा इब्राहीम के धर्म पर नहीं है। और ज़ैद बेटियों को ज़िन्दा नहीं गाड़ते थे जो अरबों के कुछ क़बीलों की रस्म थी कि बेटियों को ज़िन्दा गाड़ देते थे। वह नहीं गाड़ते थे बल्कि जो शख़्स अपनी बेटी मारना चाहता था , उनको पता लग जाता तो वह उसे कहते कि उसे ना मारो। उसे ना मारो। मैं इस का ख़र्च और ख़ुराक तुम्हारी जगह मुहय्या करूँगा। अत: वह इस को ले लेते। जब वो जवान हो जाती तो उस के बाप से कहते कि अगर तुम चाहो तो मैं उसे तुम्हारे सपुर्द किए देता हूँ और अगर चाहो तो मैं इस के सब काम पूरे कर दूँगा।(सही बुख़ारी किताब फ़ज़ाइल मनाक़िब अल-अनसार बाब हदीस ज़ैद बिन उमरो बिन नुफ़यल हदीस 3828) अर्थात शादी इत्यादि के खर्चे भी पूरे कर दूँगा। एक दूसरी रिवायत में हज़रत अस्मा बिन्त अबू बकर रज़ि वर्णन करती हैं, पहली रिवायत बुख़ारी की थी और दूसरी असम उर्रिजाल की किताब "उसदुल ग़ाबह' की है। हज़रत अस्मा बिन्त अबू बकर रज़ि वर्णन करती हैं मैंने ज़ैद बिन अम बिन नुफ़यल को काबा से पीठ लगाए हुए खड़े देखा। वह कह रहे थे कि हे क़ुरैश के लोगो इस ज़ात की क़सम ! जिसके हाथ में ज़ैद की जान है कि मेरे सिवा तुम में से किसी ने भी इब्राहीम के धर्म पर सुबह नहीं की। वह कहा करते थे कि हे अल्लाह काश कि मैं तेरी इबादत का पसंदीदा तरीक़ जानता तो मैं इसी तरह तेरी इबादत करता लेकिन मैं इस से वाक़िफ़ नहीं हूँ। फिर वह अपनी हथेली पर सजदा करते।

(उसदुल ग़ाबह भाग 2पृष्ठ 369 370-ज़ैद बिन अम्रो बिन नुफ़यल दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2003 ई)

सईद बिन मुसीब से रिवायत है कि ज़ैद बिन अम्रो की वफ़ात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बिअसत से पाँच साल पहले हुई। इस वक़्त क़ुरैश ख़ाना काअबा की तामीर कर रहे थे। जब वह फ़ौत हुए तो यह कह रहे थे कि मैं दीने इब्राहीम पर हूँ।

यह ज़िक्र तो हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि का हो रहा था। उनके पिता का ज़िक्र इसी के अन्तर्गत आ गया और बेटे को भी इस्लाम में जो स्थान मिला और फिर बाप की जो नेकियां थीं उस की वजह से यह भी तारीख़ में महफ़ूज़ हो गया और इसलिए मैं ने यहां वर्णन भी कर दिया क्योंकि ये रिवायतें बुख़ारी में भी मिलती हैं। बहरहाल अब हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि का बाक़ी वर्णन करता हूँ।

एक बार हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि और हज़रत उमरो बिन ख़त्ताब रज़ि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आप से ज़ैद बिन अम्रो के बारे में पूछा। अर्थात हज़रत सईद रज़ि के पिता के बारे में तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह ज़ैद बिन अम्रो की मग़फ़िरत करे और उन पर रहम करे। उनकी मौत दीने इब्राहीम पर हुई। इस के बाद जब भी मुस्लमान ज़ैद बिन अम्रो का ज़िक्र करते तो उनके लिए रहमत और मग़फ़िरत की दुआ करते।

(उद्धरित रोशन सितारे ग़ुलाम बारी सैफ भाग 2 पृष्ठ 156-157)(अत्तबकातुल कुब्रा भाग 3 पृष्ठ 291सईद बिन ज़ैद व मन बनी अदी बिन काब बिन लुई दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 1990 ई)

एक दूसरी रिवायत में है कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से ज़ैद बिन अम्रो के बारे में पूछा गया तो आप ने फ़रमाया वह क़ियामत के दिन अकेले एक उम्मत के बराबर उठाए जाऐंगे।

(उसदुल ग़ाबह भाग 2 पृष्ठ 368 ज़ैद बिन अम बिन नुफ़यल दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2003 ई)

जैसा कि पहले ज़िक्र हो चुका है कि हज़रत सईद बिन ज़ैद हज़रत उमर के बहनोई थे और हज़रत सईद बिन ज़ैद की बहन आतका बिन्त ज़ैद हज़रत उमर रज़ि के निकाह में आई थीं। हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि और उनकी बीवी हज़रत फ़ातिमा बिन्त ख़त्ताब रज़ि इस्लाम के शुरू में मुस्लमान हो गए थे, शुरू में ही मुस्लमान हो गए थे। यह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दारे अर्क़म में दाख़िल होने से पहले ईमान ले आए थे और हज़रत सईद रज़ि की पत्नी जैसा कि पहले भी मैं ज़िक्र कर चुका हूँ हज़रत उमर रज़ि के इस्लाम लाने का कारण बनी थीं

(उसदुल ग़ाबह फ़ी माअरफतुस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 476 सईद बिन ज़ैद दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2003 ई)

(अत्तबकातुल कुब्रा भाग 3 पृष्ठ 292 सईद बिन ज़ैद व मन बनी अदी बिन काब बिन लुई दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 1990 ई)

इस की तफ़सील तो पिछली बार हज़रत ख़बाब बिन अर्त रज़ि के ज़िक्र में वर्णन हो चुकी है लेकिन बहरहाल यहां क्योंकि हज़रत सईद रज़ि का हवाला भी है इसलिए संक्षिप्त कुछ वर्णन कर देता हूँ। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन रज़ि में लिखा है कि

हज़रत हमज़ा रज़ि को इस्लाम लाए अभी सिर्फ चंद दिन गुज़रे थे कि अल्लाह तआला ने मुस्लमानों को एक और ख़ुशी का अवसर दिखाया और हज़रत उमर रज़ि भी जो इस्लाम के कट्टर विरोधी थे वह मुस्लमान हो गए। हज़रत उमर रज़ि में सख़्ती का माद्दा तो पहले ही था। उनकी फ़ित्रत में ही था लेकिन इस्लाम की दुश्मनी ने, दुश्मनी ने उसे और भी ज़्यादा कर दिया था। अत: इस्लाम से पहले ग़रीब और कमज़ोर मुस्लमानों को उनके इस्लाम लाने की वजह से बहुत ज़्यादा तकलीफ़ दिया करते थे। एक दिन उन्हें ख़्याल आया कि उनको तो मैं तकलीफ़ें देता रहता हूँ लेकिन ये लोग तो (फिर भी रुकते नहीं और अपने ईमान पर पक्के हैं तो क्यों न इस फ़ित्ना के बानी को ख़त्म कर दिया जाए। इस नीयत से घर से निकले। हाथ में नंगी तलवार थी। रास्ता में एक शख़्स मिला उन्होंने कहा उमर बड़े ग़ुस्सा में नंगी तलवार ले कर कहाँ जा रहे हो? उन्होंने कहा आज मैं मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम)का काम समाप्त करने जा रहा हूँ। तो उसने कहा कि पहले अपने घर की ख़बर तो लो। तुम्हारी बहन और बहनोई भी मुस्लमान हो चुके हैं। इस पर हज़रत उर रज़ि ने फ़ौरन अपना रुख पल्टा और अपनी बहन के घर की तरफ़ चले गए। जब घर के क़रीब पहुंचे तो अंदर से क़ुरआन करीम की तिलावत की आवाज़ आ रही थी। ख़ब्बाब बिन अर्त रज़ि बड़ी अच्छी आवाज़ा से वह पढ़ रहे थे। यह आवाज़ सुनकर हज़रत उमर रज़ि का ग़ुस्सा और बढ़ गया। जल्दी से एक दम दरवाज़ा खोल कर घर में दाख़िल हुए। बहरहाल इस आहट से ख़बाब रज़ि तो फ़ौरन कहीं छिप गए। पर्दा या किसी जगह कोई छिपने की जगह थी और फ़ातिमा ने जो उन की बहन थीं उन्होंने फ़ौरी तौर पर क़ुरआन शरीफ़ के पृष्ठ भी इधर उधर छुपा दिए। इस पर हज़रत उमर रज़ि ने हज़रत फ़ातिमा रज़ि और हज़रत सईद रज़ि से कहा कि सुना है तुम लोग अपने धर्म से फिर गए हो? और यह कह के मारने के लिए अपने बहनोई सईद बिन ज़ैद रज़ि से लिपट गए। फ़ातिमा अपने पति को बचाने के लिए बीच में आ गईं लेकिन इस वक़्त हज़रत उमर रज़ि का हमला ऐसा था कि हज़रत फ़ातिमा रज़ि भी उस की ज़द में आ गईं और ज़ख़्मी भी हो गईं। बहरहाल ज़ख़्मी होने के बाद फ़ातिमा की जुर्रत बढ़ी। उन्होंने बड़े जोश से कहा कि हाँ उमर हम मुस्लमान हो गए हैं। जो तुम्हारे से हो सकता है कर लो लेकिन हम इस्लाम को नहीं छोड़ेंगे। बहरहाल बहन का यह साहस और दलेरी भरा कलाम सुना, यह बात सुनी तो आँख उठा कर ऊपर देखा। और जब हज़रत उमर रज़ि ने देखा कि बहन भी ख़ूनसे भरी हुई है। इस को भी ऐसी चोट लगी थी कि चेहरे से ख़ून बह रहा था। इस नज़्ज़ारे का हज़रत उमर रज़ि की तबीयत पर बड़ा असर हुआ और फ़ौरन उन्होंने कहा अच्छा मुझे अपना वह कलाम तो दिखाओ जो तुम लोग पढ़ रहे थे। फ़ातिमा रज़ि ने कहा इस तरह

नहीं। क्योंकि तुम इन पृष्ठों को नष्ट कर दोगे। उमर रज़ि ने जवाब दिया कि नहीं । नहीं करता। वापस कर दूँगा। तो इस पर हज़रत फ़ातिमा रज़ि ने कहा फिर भी इस तरह नहीं दिखाया जा सकता। पहले तुम जा के नहा लो, फिर देखना। अत: जब नहा कर के फ़ारिग़ हुए तो हज़रत फ़ातिमा रज़ि ने क़ुरआन करीम के पृष्ठ निकाल कर उनके सामने रख दिए। उन्होंने उठा कर देखा तो सूरत ताहा की ये आरम्भिक आयतें थीं और हज़रत उमर रज़ि बड़े मरऊब दिल के साथ उन्हें पढ़ने लगे। फ़ित्रत नेक थी और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दुआ भी थी। जब पढ़ना शुरू किया तो हर हर शब्द उनके दिल में उतरता गया और पढ़ते पढ़ते जब इस आयत पर पहुंचे, ये दो आयते हैं कि

إِنَّنِيٓ أَنَا اللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنَا۠ فَٱعْبُدْنِى وَأَقِمِ ٱلصَّلَوٰةَ لِذِكْرِىٓ ۔ إِنَّ ٱلسَّاعَةَ ءَاتِيَةٌ أَكَادُ أُخْفِيهَا لِتُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا تَسْعَىٰ

(ताहा:15-16)

अर्थात मैं ही इस दुनिया का अकेला ख़ालिक़ तथा मालिक हूँ। मेरे सिवा और कोई उपासना योग्य नहीं। अत: तुम्हें चाहिए कि सिर्फ मेरी ही इबादत करो और मेरी ही याद के लिए अपनी दुआओं को वक़्फ़ कर दो। देखो मौऊद घड़ी जल्दी आने वाली है मगर हम उस के वक़्त को छुपाए हुए हैं ताकि हर शख़्स अपने किए का सच्चा बदला पा सके।

जब हज़रत उमर रज़ि ने यह आयत पढ़ी तो मानो उनकी आँख खुल गई और अपने आप ही के बोले। कैसा अजीब कलाम है ? कैसा पवित्र कलाम है? ख़बाब रज़ि ने जब ये शब्द सुने, वह छिपे हुए थे तो फ़ौरन बाहर निकल आए और ख़ुदा का शुक्र अदा किया और फिर उन्होंने कहा कि यह जो तब्दीली पैदा हुई है यह रसूलुल्लाह की दुआ का नतीजा है क्योंकि ख़ुदा की क़सम अभी कल ही मैं ने आप को यह दुआ करते सुना था कि हे अल्लाह !तू उमर इब्न ख़त्ताब या अम बिन हश्शाम अर्थात अबूजहल में से कोई एक ज़रूर इस्लाम को प्रदान कर दे। बहरहाल हज़रत उमर रज़ि ने इस बात पर हज़रत ख़बाब रज़ि से कहा कि मुझे अभी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पता बताओ। कहाँ हैं वह? और तलवार भी उन्होंने नयाम में नहीं डाली हुई थी। इसी तरह खींची हुई थी। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस ज़माने में दारे अर्क़म में होते थे। अत: ख़बाब रज़ि ने उन्हें वहां का पता बता दिया। हज़रत उमर वहां गए। दरवाज़े पर पहुंच के ज़ोर से दस्तक दी। सहाबा रज़ि ने दरवाज़े की दराड़ से देखा तो देखा कि हज़रत उमर रज़ि नंगी तलवार लिए खड़े हैं और यह देखकर दरवाज़ा खोलने में शंका की । आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि दरवाज़ा खोल दो। हज़रत हमज़ा रज़ि ने भी कहा (हज़रत हमज़ा रज़ि भी वहां मौजूद थे)कि दरवाज़ा खोल दो। अगर तू नेक इरादे से आया है तो बेहतर है वर्ना अगर बुरा इरादा हुआ तो उसी की तलवार से इस का सिर उड़ा दूँगा। दरवाज़ा खोला गया। हज़रत उमर रज़ि नंगी तलवार लिए अंदर दाख़िल हुए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर रज़ि का पल्लू पकड़ के खींचा और फ़रमाया उमर किस इरादे से आए हो? उन्होंने निवेदन किया हे रसूलुल्लाह मैं मुसलमान होने आया हूँ। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह शब्द सुने तो ख़ुशी से अल्लाहो-अकबर कहा और यह लिखा है कि साथ ही सहाबा रज़ि ने इस ज़ोर से अल्लाहो-अकबर का नारा बुलंद किया कि मक्का की पहाड़ियां भी गूंज उठीं।

(उद्धरित सीरत ख़ातमन्नबय्यीन पृष्ठ 157 से159)

तो यह हज़रत सईद रज़ि थे जो हज़रत उमर रज़ि के भी इस्लाम लाने का माध्यम बने। हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि अव्वलीन मुहाजिरीन में से थे। मदीना पहुंच कर हज़रत रफ़आह बिन अब्दुल मुन्ज़िर के यहाँ ठहरे जो हज़रत अब लुबबह के भाई थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको हज़रत रफ़िअ बिन मालिक रज़ि से बाई बनाया जबकि एक रिवायत के अनुसार हज़रत उबै बिन कअब रज़ि से करवाई। हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि जंग बदर में शामिल नहीं हो सके थे। परन्तु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें माल ग़नीमत में से हिस्सा दिया था।(उसदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 476 सईद बिन ज़ैद दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2003 ई)(अत्तबकातुल कुब्रा भाग 3 पृष्ठ 292 सईद बिन ज़ैद व मन बनी अदी बिन काब बिन लुई दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 1990 ई) और इसी वजह से इन सब सहाबा रज़ि को जिन को किसी न किसी सूरत में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने शामिल फ़रमाया या आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेश के अनुसार उनको किसी रंग में भी हिस्सा देकर शामिल फ़रमाया गया उनको बदरी सहाबा रज़ि में शुमार किया जा रहा है।

उनकी जंग बदर में न शामिल होने की वजह हज़रत तलहा बिन उबैयदुल्लाह रज़ि के ज़िक्र में वर्णन हो चुकी है परन्तु यहां भी वर्णन करना ज़रूरी है इसलिए वर्णन कर देता हूँ। वैसे भी इस को दो तीन महीने गुज़र गए हैं और यहां वर्णन करना ज़रूरी भी है

बहरहाल हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि की जंग बदर में शरीक न होने की जो वजह वर्णन की गई है यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़ुरैश के एक क़ाफ़िले की शाम से रवानगी का अंदाज़ा फ़रमाया तो आप ने मदीना से अपनी रवानगी से दस रोज़ पहले हज़रत तलहा बिन उबैयदुल्लाह रज़ि और हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ को क़ाफ़िला की ख़बर लाने के लिए भेजा। ये दोनों होरा पहुंचे। यह वहां एक जगह है। वहीं ठहरे रहे यहां तक कि क़ाफ़िला उनके पास से गुज़रा। होरा बहरे अहमर पर स्थित एक पड़ाव है जहां से हिजाज़ और शाम के दरमयान चलने वाले क़ाफ़िले गुज़रते थे। बहरहाल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हज़रत तलहा रज़ि और हज़रत सईद रज़ि के वापस आने से पहले ही ये ख़बर मालूम हो गई कि वह क़ाफ़िला तो वहां से गुज़र के चला गया है। अब इस तरफ़ आने का इरादा नहीं है। इस वक़्त वह क़ाफ़िला इधर आने की बजाय जब गुज़र गया तो अभी सही हालात की ख़बर तो नहीं थी लेकिन यह बहरहाल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़बर पहुंच गई कि क़ाफ़िला वहां से गुज़र गया है। इस पर आप ने सहाबा को बुलाया और क़ुरैश के क़ाफ़िले के इरादा से रवाना हुए मगर क़ाफ़िला साहिल के साथ रास्ते से तेज़ी से निकल गया और तलाश करने वालों से बचने के लिए दिन रात चलता रहा। क़ाफ़िले वालों ने भी अपना रास्ता बदल लिया तो उधर टकराओ नहीं हुआ। जिस रास्ते से उनके आने की आशा थी वहां से नहीं गुज़रा बल्कि एक चक्कर काट के तट की तरफ़ चला गया। इस के बाद हज़रत तलहा बिन उबैयदुल्लाह रज़ि और हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि मदीना के लिए रवाना हुए ताकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़ाफ़िला की ख़बर दें। इन दोनों को आप की जंग बदर के लिए रवानगी का इलम नहीं था। यह मदीना उस दिन पहुंचे जिस दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बदर में क़ुरैश के लश्कर से मुक़ाबला किया था। ये दोनों भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर होने के लिए मदीना से रवाना हुए और आप की बदर से वापसी पर तुर में मिले। तुर मदीना से उन्नीस मील की दूरी पर एक वादी है जिसमें कसरत से मीठे पानी के कुँवें हैं। जंग बदर के लिए जाते हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यहां क़ियाम फ़रमाया था। यह तिजारती क़ाफ़िला दूसरा था जो इधर से निकल गया लेकिन मक्का से हमला करने के लिए जो एक फ़ौज आई थी वह दूसरी थी जिनकी बदर के स्थान पर मुठभेड़ हुई लेकिन बहरहाल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इसलिए निकले थे कि इस क़ाफ़िले को देखें कि उनकी नीयत किया है। यह नहीं पता था कि एक फ़ौज भी आ रही है। बहरहाल आगे ज़िक्र यह है कि हज़रत तलहा रज़ि और हज़रत सईद रज़ि जंग में शामिल न हुए मगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बदर के माल ग़नीमत में से उनको हिस्सा प्रदान फ़रमाया और यह दोनों बदर में शामिल ही क़रार दिए गए।

(अत्तबकातुल कुब्रा भाग 3 पृष्ठ 292-293 सईद बिन ज़ैद व मन बनी अदी बिन कअब बिन लुई दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

(अस्सीरतुन्नबविय्या अला ज़ौइल क़ुरआन वस्सलनत भाग 2 पृष्ठ 123)(फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 75 ज़व्वार एकेडेमी कराची 2003 ई)

हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि अशरा मबशरा अर्थात इन दस ख़ुशनसीब सहाबा रज़ि में से हैं जिन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़बान मुबारक से इसी दुनिया में जन्नत की ख़ुशख़बरी मिली। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि वर्णन करते हैं कि रसूले ख़ूदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अबूबकर रज़ि,उमर रज़ि, उस्मान रज़ि, अली रज़ि, तलहा रज़ि, ज़ुबैर रज़ि, अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि , सअद बिन अबी वकास रज़ि, सईद बिन ज़ैद रज़ि और अबू उबैदा बिन अल्जर्राह रज़ि में से एक एक का नाम लेकर फ़रमाया कि यह जन्नती हैं।

(उद्धरित रोशन सितारे ग़ुलाम बारी सैफ भाग 2 पृष्ठ 155)

हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि वर्णन करते हैं कि मैं नौ लोगों के बारे में इस बात की गवाही देता हूँ कि वे जन्नती हैं और अगर मैं दसवें के बारे में भी यही कहूं, गवाही दूं तो गुनाहगार नहीं हूँगा। कहा गया वह कैसे? तो उन्होंने कहा कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ हिरा पहाड़ पर थे तो वह हिलने लगा। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ठहरा रह हे हिरा यक़ीनन तुझ पर एक

नबी या सिद्दीक़ या शहीद है। किसी ने पूछा वे दस जन्नती लोग कौन हैं? हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि ने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, अबू बकर रज़ि, उमर रज़ि, उसमान रज़ि, अलीरज़ि , तलहा रज़ि, ज़ुबेर रज़ि, सअद रज़ि और अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि हैं। और कहा गया कि दसवाँ कौन है तो हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि ने कहा वह मैं हूं।

(सुनन अत्तिरमज़ी अबवाब अलमनाकिब बाब मनाक़िब अबी अलऔर वा असमा सईद बिन ज़ैद हदीस 3757)

(उसदुल ग़ाबह फ़ी माअरफतुस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 478 सईद बिन ज़ैद दारुल कुतुब अल्इलिमिया बेरूत 2016 ई)

सईद बिन ज़ुबैर वर्णन करते हैं कि हज़रत अबी बकर रज़ि , हज़रत उमर ओ, हज़रत उसमान रज़ि, हज़रत अली रज़ि, हज़रत तलहा रज़ि, हज़रत ज़ुबैर रज़ि, हज़रत सअद रज़ि, हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि और हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि मैदाने जंग में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आगे होते अर्थात आप का रक्षा करते और नमाज़ में आप के पीछे खड़े होते।

(उसदुल ग़ाबह फ़ी माअरफतुस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 478 सईद बिन ज़ैद दारुल कुतुब अल्इिलमया)

हकीम बिन मुहम्मद अपने पिता से रिवायत करते हैं कि उन्होंने हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि की अँगूठी में क़ुरआन करीम की आयत लिखी हुई देखी।

(अत्तबकातुल कुब्रा भाग 3 पृष्ठ 294 सईद बिन ज़ैद व मन बनी अदी बिन काब बिन लुई। दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 1990 ई)

हज़रत उमर रज़ि के दौरे ख़िलाफ़त में शाम के युद्ध में जब बाक़ायदा हमला हुआ तो हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि हज़रत अबू उबैदह रज़ि के अधीन पैदल फ़ौज की अफ़्सरी पर निर्धारित हुए। दमिशक़ के घेराव और यरमौक की फ़ैसला वाली जंग में नुमायां बहादुरी और जाँबाज़ी के साथ शामिल रहे। जंग के दौरान हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि को दमिशक़ की गवर्नरी पर मामूर किया गया लेकिन उन्होंने हज़रत अबू उबैदह रज़ि को लिखा कि मैं ऐसा नहीं कर सकता कि आप लोग जिहाद करें और में इस से महरूम रहूं। इसलिए ख़त पहुंचते ही मेरी जगह पर किसी और को भेज दें और मैं जल्दी से जल्दी आपके पास पहुंचता हूँ। अत: हज़रत अबूउबैदह रज़ि ने मजबूरन यज़ैद बिन अबू सुफ़ियान को भिजवा दिया और हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि दोबारा रह जंग में शामिल हो गए।

(उद्धरित रोशन सितारे ग़ुलाम बारी सैफ भाग 2 पृष्ठ 164)(उद्धरित सैरुस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 138 हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि प्रकाशन दारुल इशाअत)

हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि के सामने बहुत से इन्क़िलाबात बरपा हुए, बीसियों ख़ाना जंगीयाँ पेश आएं और यद्दिप वह अपनी नेकी के बाइस उन झगड़ों से हमेशा किनारा रहे परन्तु जिसकी निसबत जो राय रखते थे उस को आज़ादी के साथ ज़ाहिर करने में घबराते भी नहीं करते थे। हज़रत उसमान रज़ि शहीद हुए तो वह प्राय कूफ़ा की मस्जिद में फ़रमाया करते थे कि तुम लोगों ने उसमान रज़ि के साथ जो सुलूक किया उस से अगर अहद पहाड़ हिल जाए तो कुछ आशचर्य नहीं।

(उद्धरित सैरुस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 139)

इसी तरह एक दिन कूफ़ा की जामा मस्जिद में मुग़ीरा बिन शुअब ने हज़रत अली रज़ि की शान में बुरा-भला कहा तो हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि ने फ़रमाया हे मुग़ीरह बिन शअबह हे मुग़ीरह बिन शअब हे मुग़ीरह बिन शअब मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि ये दस जन्नत में होंगे और उनमें से एक हज़रत अली रज़ि भी थे।

(उद्धरित रोशन सितारे ग़ुलाम बारी सैफ भाग 2 पृष्ठ 165)

हज़रत सईद बिन ज़ैद की दुआएं स्वीकार होती थीं। एक बार उन पर ज़मीन पर क़ब्ज़ा करने का इल्ज़ाम लगाया गया जिसका विस्तार इस तरह है कि हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि की ज़मीन के साथ जुड़ी ज़मीन एक औरत अरवा बिन्त उवेस की थी। उसने हज़रत मुआविया रज़ि की तरफ़ से निर्धारित किए गए मदीना पर गवर्नर मरवान बिन हक्म के पास शिकायत की कि सईद ने ज़ुलम से मेरी ज़मीन पर क़बज़ा कर लिया है। मरवान ने तहक़ीक़ के लिए आदमी निर्धारित किए तो हज़रत सईद ने उन्हें जवाब दिया कि तुम्हारा क्या ख़्याल है कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से यह सुनने के बाद ज़ुल्म कर सकता हूँ कि जो ज़ुल्म की राह से एक बालिशत ज़मीन भी ग़सब करेगा क़ियामत के दिन सातों ज़मीनें उस के गले का बोझ होंगी। इस के बाद उन्होंने कहा हे ख़ुदा अगर अरवा झूठ बोलती है तो इस को इस वक़्त तक मौत न दे जब तक उस की नज़र न जाती रहे और इस की क़ब्र उस के घर का कुँआं न बने। अत: लिखा है कि अरवा पहले देखने की नेअमत से महरूम हुई। फिर एक रोज़ चलते हुए अपने ही घर के कुँवें में गिर कर मर गई। इस के बाद यह मुहावरा बन गया और मदीना वाले यह कहने लगे कि

أَعْمَاكَ اللّٰهُ كَمَا أَعْمٰى اَرْوٰيكه الله

अल्लाह तुझे इसी तरह अंधा करे जिस तरह उसने अरवा को अंधा किया था।

(उसदुल ग़ाबह फ़ी माअरफतुस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 477 सईद बिन ज़ैद दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2003 ई)

(उद्धरित रोशन सितारे ग़ुलाम बारी सैफ भाग 2 पृष्ठ 164-165)

हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि ने पच्चास या इक्कावन हिज्री में लगभग सत्तर बरस की उमर में जुम्मा के दिन वफ़ात पाई। कुछ रिवायतों के अनुसार वफ़ात के वक़्त उनकी उमर सत्तर साल से अधिक हो गई थी, ज़्यादा थी। मदीना के किनारे में अकीक़ के स्थान पर उनका स्थायी निवास था और अक़ीक़! जज़ीरा अरब में इस नाम की कई वादियां हैं। उनमें सबसे अहम मदीना की वादी अक़ीक़ है जो मदीना के दक्षिण पश्चिम से उत्तर पूर्व तक फैली हुई है और इस में मदीना मुनव्वरा की सारी वादियां आकर शामिल हो जाती हैं। बहरहाल हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि जुम्मा की तैयारी कर रहे थे। जब उन्होंने हज़रत सईद की वफ़ात की ख़बर सुनी तो वे जुम्अ पर नहीं गए बल्कि उसी वक़्त अक़ीक़ की तरफ़ रवाना हो गए। हज़रत सअद बिन अबी वकास रज़ि ने ग़ुसल दिया और उनकी लाश मुबारक लोग कंधों पर रखकर मदीना लाए। फिर हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि ने नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई और मदीना में उनकी तदफ़ीन हुई।

(उसदुल ग़ाबह फ़ी माअरफतुस्सहाबा भाग पृष्ठ 478 सईद बिन ज़ैद दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2003 ई)

(उद्धरित अज़ सैरुस्सहाबा पृष्ठ 138 हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि प्रकाशन दार इशाअत कराची)

(फ़रहँग सीरत , पृष्ठ 204 ज़व्वार एकेडेमी कराची 2003 ई)

एक दूसरी रिवायत के अनुसार हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि ने हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि की वफ़ात की ख़बर सुनी तो वह जुम्अ: पर जाने की तैयारी कर रहे थे लेकिन वह जुम्अ: पर न गए और उनकी तरफ़ गए और उन्हें नहलाया, ख़ुशबू लगाई और उनकी नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई जबकि आईशा बिन्त सअद वर्णन करती हैं कि हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि को हज़रत सअद बिन अबी वकास रज़ि ने नहला दिया और ख़ुशबू लगाई फिर घर आए और ख़ुद भी नहलाया किया। फिर जब घर से बाहर निकले तो कहा कि हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि को नहलाने की वजह से नहलाया नहीं किया बल्कि गर्मी की वजह से मैंने नहाया है। हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि की नमाज़ जनाज़ा हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि ने पढ़ाई। हज़रत सअद बिन अबी वकास रज़ि और अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि दोनों क़ब्र में उतरे अर्थात लाश को कब्र के अंदर रखने के लिए कब्र में आए।

(उसदुल ग़ाबह फ़ी माअरफतुस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 478 सईद बिन ज़ैद दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2003 ई)

(उद्धरित सैरुस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 138 हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि प्रकाशन दार इशाअत कराची)

हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि ने विभिन्न समयों में दस शादियां कीं और उन बीवियों से तेरह लड़के और उन्नीस लड़कियां उनकी पैदा हुईं

(अत्तबकातुल कुब्रा भाग 3 पृष्ठ 292 सईद बिन ज़ैद व मन बनी अदी बिन कअब बिन लुई दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 1990 ई)

(उद्धरित सैरुस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 140 हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि प्रकाशन दारुल इशाअत कराची)

अगला ज़िक्र हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि का है। इस का कुछ संक्षिप्त वर्णन कर देता हूँ। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि का नाम ज़माना जाहिलीयत में अब्दे अमरो था और दूसरी रिवायत के अनुसार अबदुल कअब: था। इस्लाम लाने के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह नाम बदल कर अब्दुर्रहमान रख दिया। उनका सम्बन्ध क़बीला बनू ज़ुहरह बिन किलाब से था।

(अत्तबकातुल कुब्रा भाग 3 पृष्ठ 92 अब्दुर्रहमान बिन औफ प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

सहला बिन्त आसिम वर्णन करती हैं कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि सफ़ैद, ख़ूबसूरत आँखों वाले, लंबी पलकों, लंबे नाक वाले थे। सामने के ऊपर वाले दाँत में से कुचली वाले दाँत लंबे थे। कानों के नीचे तक बाल थे। गर्दन लंबी, हथेलियाँ मज़बूत और उंगलियां मोटी थीं

(अल्इस्तियाब भाग 2 पृष्ठ 847 अब्दुर्रहमान बिन औफ प्रकाशन दारुल जैल बेरूत)

इब्राहीम बिन सइद अपने पिता से रिवायत करते हैं कि हज़रत अब्दुर्रहामन औफ लम्बे क़द, सफ़ैद रंग जिसमें सुर्ख़ी की मिलावट थी, सुन्दर चेहरे वाले, कोमल त्वचा वाले थे। ख़िज़ाब नहीं लगाते थे। उनके बारे में कहा जाता है कि पांव से लंगड़े थे। आप की यह लंगड़ाहट उहुद के बाद हुई क्योंकि उहुद के मैदान में अल्लाह की राह में ज़ख़्मी हुए थे।

(अल-असाबा फ़ी तमीईज़ सहाबा भाग 4 पृष्ठ 292 अब्दुर्रहमान बिन औफ प्रकाशन दार अलकतब अल्इलमिया बेरूत1995-ए-

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि इन दस लोगों में शामिल थे जिनको उनकी ज़िन्दगी में ही जन्नत की बिशारत मिल गई थी। आप उन अस्हाबे शूरा के छ: लोगों में से एक हैं जिन को हज़रत उमर रज़ि ने ख़िलाफ़त के च्यन के लिए निर्धारित फ़रमाया और उन लोगों के बारे में हज़रत उमर रज़ि ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी वफ़ात के वक़्त इन सबसे राज़ी थे।

(अल-असाबा फ़ी तमीईज़ सहाबा भाग 4 पृष्ठ 290 अब्दुर्रहमान बिन औफ प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1995ई)

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि आमुल फ़ील के दस साल बाद पैदा हुए। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि इन थोड़े लोगों में से थे जिन्होंने ज़माना जाहिलियत में भी शराब को अपने ऊपर हराम किया हुआ था। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि आरम्भिक आठ इस्लाम लाने वालों में से हैं। जब हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दारे अर्क़म को तब्लीग़ी मर्कज़ बनाया तो आप इस से भी पहले हज़रत अबूबकर रज़ि की तब्लीग़ से इस्लाम क़बूल कर चुके थे। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि हब्शा की तरफ़ जाने वाली दोनों हिजरतों में शामिल थे

(उद्धरित रोशन सितारे पृष्ठ 103-104)

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 92 अब्दुर्रहमान बिन औफ दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत)

सही बुख़ारी में रिवायत है कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि वर्णन करते हैं जब हम मदीना आए तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे और सअद बिन रबीअ रज़ि को आपस में भाई भाई बना दिया। तो सअद बिन रबीइ रज़ि ने कहा कि मैं अन्सार में से ज़्यादा मालदार हूँ। (यह रिवायत सअद बिन रबीइ रज़ि के ज़िक्र में भी आ चुकी है लेकिन बहरहाल यहां भी ज़िक्र करता हूँ। अत: मैं तक़सीम कर के आधा माल आप को दे देता हूँ और मेरी दो बीवियों में से जो आप पसंद करें मैं आपके लिए इस से अलग हो जाऊँगा। जब उस की इद्दत गुज़र जाए तो इस से आप निकाह कर लें। यह सुनकर हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि ने हज़रत सअद रज़ि से कहा कि अल्लाह तआला आप के अहल और माल में आप के लिए बरकत रख दे। मुझे इस की कोई ज़रूरत नहीं। क्या यहां कोई बाज़ार है जिसमें व्यापार होता हो। हज़रत सअद रज़ि ने बताया कि कैनक़ा अका बाज़ार है। हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि यह मालूम कर के सुब्ह-सवेरे वहां गए। वहां कारोबार किया और उन्होंने वहां पनीर और घी मुनाफ़ा के तौर पर बचाया और उसे लेकर हज़रत सअद रज़ि के घर वालों के पास वापिस पहुंचे। फिर इसी तरह हर सुबह आपओ वहां बाज़ार में जाते और कारोबार करते रहे और मुनाफ़ा कमाते रहे। अभी कुछ अरसा गुज़रा था कि हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि आए और उन पर ज़ाफ़रान का निशान था तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा कि क्या तुमने शादी कर ली है? निवेदन किया जी हाँ। आप ने फ़रमाया किस से? उन्होंने कहा कि अन्सार की एक औरत से । फ़रमाया कितना महर दिया है? अर्ज़ किया एक गुठली के बराबर सोना या कहा सोने की गुठली। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वलीमा भी करो चाहे एक बकरी का ही सही।

(सही अलबुख़ारी किताबुल बयूअ बाब व कौल अल्लाह तआला व अहलुल्लाह अलबेइ हदीस2048-2049)

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि वर्णन करते हैं कि मैं ने अपने आपको इस हालत में भी देखा कि अगर में कोई पत्थर भी उठाता तो उम्मीद करता कि नीचे सोना या चांदी मिलेगी। अर्थात अल्लाह तआला ने व्यापार में इतनी बरकत रख दी थी।

(अत्तबकातुल कुब्रा भाग 3 पृष्ठ 93 अब्दुर्रहमान बिन औफ प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि जंग बदर, उहद समेत समस्त जंगों में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल रहे।

(अत्तबकातुल कुब्रा भाग 3 पृष्ठ 95 अब्दुर्रहमान बिन औफ प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

जंग बदर की एक घटना वर्णन करते हुए हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि कहते हैं कि मैं बदर की लड़ाई में सफ़ में खड़ा था कि मैंने अपने दाएं बाएं नज़र डाली तो क्या देखता हूँ कि दो अन्सारी लड़के हैं। उनकी उमरें छोटी हैं। मैंने इच्छा की कि काश मैं ऐसे लोगों के मध्य होता जो उनसे ज़्यादा जवान और तन्दरुस्त होते। इतने में उनमें से एक ने मुझे हाथ से दबा कर पूछा कि चाचा क्या अबुजहल को पहचानते हो? मैंने कहा हाँ भतीजे !तुम्हें इस से क्या काम है? उसने कहा कि मुझे बताया गया है कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को गालियां देता है और इस ज़ात की क़सम है जिसके हाथ में मेरी जान है अगर मैं इस को देख पाऊं तो मेरी आँख से इस की आँख जुदा न होगी जब तक हम दोनों में से वह न मर जाए जिसकी मुद्दत पहले मुक़द्दर है। मुझे इस से बड़ा ताज्जुब हुआ। हज़रत अब्दुर्रहमान कहते हैं फिर दूसरे ने मुझे हाथ से दबाया उसने भी मुझे इसी तरह पूछा। अभी थोड़ा अरसा गुज़रा होगा कि मैंने अबुजहल को लोगों में चक्कर लगाते देखा। मैंने कहा देखो यह है तुम्हारा वह साथी जिसके बारे में तुमने मुझसे पूछा था। यह सुनते ही वे दोनों जल्दी से अपनी तलवारें लिए उस की तरफ़ लपके और उसे इतना मारा कि इस को जान से मार डाला और फिर लौट कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए और आप को ख़बर दी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा तुम में से किस ने इस को मारा है। दोनों ने कहा मैंने उस को मारा है। आप ने पूछा क्या तुम ने अपनी तलवारें पोंछ कर साफ़ कर ली हैं? उन्होंने कहा नहीं। आप ने तलवारों को देखा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम दोनों ने ही इस को मारा है। इस का सामान ग़नीमत मुआज़ बिन अफरा और मुआज़ बिन जमूओ को मिलेगा और इन दोनों का नाम मुअज़ था। मुअज़् बिन अफरा और मुआज़ बिन अमरो बिन जमूह। यह बुख़ारी की रिवायत है

अबुजहल के क़तल के सिलसिला में यह वज़ाहत पहले भी हो चुकी है। दोबारा वर्णन कर देता हूँ कि कुछ रिवायतों में है कि अफरा के दो बेटों मुअव्विज़ और मुआज़ रज़ि ने अबू जहल को मौत के क़रीब पहुंचा दिया था और बाद में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि ने इस का सिर तन से जुदा किया था। इमाम इब्ने हिज्र ने इस बात का इज़हार किया है कि मुआज़ बिन अमरो और मुआज़ बिन अफ़रा के बाद मुअव्विज़ बिन अफ़रा ने भी इस पर वार किया होगा। यह भी शरह बुख़ारी फ़तहुल बारी में लिखा है

(सही अल-बख़ारी किताब फ़र्ज़ अलख़ुमस बाब मन लम यख़मस अल-असबाब हदीस 3141 किताबुल मग़ाज़ी बाब क़तल अबी जहल हदीस 3961-3962) (फ़तहुल बारी शरह सही बुख़ारी भाग 7 पृष्ठ 295-296 अलमकतब अस्सलफ़ी)

इस घटना को हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने इस तरह वर्णन फ़रमाया है कि अबुजहल जो मक्का के समस्त घरानों का सरदार और कुफ़्फ़ार की फ़ौज का कमांडर था जब बदर की जंग के अवसर पर वह फ़ौज की तर्तीब कर रहा था हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि जैसा अनुभव वाला जरनैल कहता है कि मैंने अपने दाएं बाएं दो अन्सारी लड़कों को देखा जो पंद्रह पंद्रह साल की उमर के थे। मैंने उनको देखकर कहा आज दिल की हसरतें निकालने का अवसर नहीं। बदक़िस्मती से मेरे इर्द-गिर्द ना तजुर्बा कार बच्चे और वह भी अन्सारी बच्चे खड़े हैं जिनको जंग से कोई तुलना ही नहीं। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि लिखते हैं कि हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि कहते हैं कि मैं इसी उधेड़बुन में था कि दाएं तरफ़ से मेरे पहलू में कुहनी लगी। मैं ने समझा कि दाएं तरफ़ का बच्चा कुछ कहना चाहता है और मैंने उस की तरफ़ अपना मुँह मोड़ा। उसने कहा चाचा ज़रा झुक कर बात सुनो। मैं आपके कान में एक बात कहना चाहता हूँ ताकि मेरा साथी इस बात को

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

सुन न ले। वह कहते हैं जब मैं ने अपना कान उस की तरफ़ झुकाया तो उसने कहा चाचा वह अबुजहल कौन सा है जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस क़दर दुख दिया करता था। चाचा मेरा दिल चाहता है कि मैं इस को मारों। वह कहते हैं कि अभी उस की यह बात ख़त्म नहीं हुई थी कि मेरे बाएं पहलू में कुहनी लगी और मैं अपने बाएं तरफ़ के बच्चा की तरफ़ झुक गया और इस बाएं तरफ़ वाले बच्चा ने भी यही कहा कि चाचा वह अबुजहल कौन सा है जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इतना दुख दिया करता था? मेरा दिल चाहता है कि मैं आज उस को मारों। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि कहते हैं बावजूद तजरबाकार सिपाही होने के मेरे दिल में यह ख़्याल भी नहीं आ सकता था कि अबुजहल जो फ़ौज का कमांडर था, जो अनुभवी सिपाहियों के हलक़ा में खड़ा था इस को मैं मार सकता हूँ। मैंने उंगली उठाई और एक ही वक़्त में इन दोनों लड़कों को बताया कि वह सामने जो शख़्स कवच पहने ज़िरह में छिपा हुआ खड़ा है जिसके सामने मज़बूत और बहादुर जरनैल नंगी तलवारें अपने हाथों में लिए खड़े हैं वह अबुजहल है। मेरा मतलब यह था कि मैं उनको बताऊं कि तुम्हारे जैसे न तजुर्बा कार बच्चों के इख़तियार से यह बात बाहर है मगर वह, (अब्दुर्रहमान कहते हैं कि मेरी वह उंगली जो इशारा कर रही थी अभी नीचे नहीं झुकी थी कि जैसे बाज़ चिड़िया पर हमला करता है इसी तरह वे दोनों अंसारी बच्चे कुफ़्फ़ार की सफ़ों को चीरते हुए अबुजहल की तरफ़ दौड़ना शुरू हुए। अबुजहल के आगे अकिरमा उस का बेटा खड़ा था जो बड़ा बहादुर और अनुभव वाला जरनैल था मगर यह अंसारी बच्चे इस तेज़ी से गए कि किसी को वहम तथा गुमान भी न हो सकता था कि किस मक़सद के लिए ये आगे बढ़े हैं और देखते देखते अबुजहल पर हमला करने के लिए कुफ़्फ़ार की सफ़ों को चीरते हुए ठीक पहरा दारों तक जा पहुंचे। नंगी तलवारें अपने हाथ में लिए जो पहरेदार खड़े थे वो वक़्त पर अपनी तलवारें भी नीचे न ला सके। सिर्फ एक पहरेदार की तलवार नीचे झुक सकी और एक अन्सारी लड़के का बाज़ू कट गया मगर जिनको जान देना आसान मालूम होता था उनके लिए बाज़ू का कटना क्या रोक बन सकता था। जिस तरह पहाड़ पर से पत्थर गिरता है इसी तरह वे दोनों लड़के पहरा दारों पर दबाव डालते हुए अबुजहल पर जा गिरे और जंग शुरू होने से पहले ही कुफ़्फ़ार के कमांडर को जा गिराया। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि कहते हैं कि मैं जंग के आख़िरी वक़्त में वहां पहुंचा जहां अबुजहल जान निकलने की हालत में पड़ा हुआ था। मैंने कहा सुनाओ क्या हाल है? उसने कहा मर रहा हूँ। पर हसरत से मर रहा हूँ क्योंकि मरना तो कोई बड़ी बात नहीं लेकिन अफ़सोस यह है कि दिल की हसरत निकालने से पहले अन्सार के दो छोकरों ने मुझे मार गिराया। मक्का के लोग अन्सार को बहुत हीन समझा करते थे। इसलिए उसने अफ़सोस के साथ उस का ज़िक्र किया और कहा यही हसरत है जो अपने दिल में लिए मर रहा हूँ कि अन्सार के दो छोकरों ने मुझे मार डाला। फिर वह उनसे कहने लगा में इस क़दर शदीद तकलीफ़ में हूँ। अब्दुल्लाह बिन मसऊद को अबुजहल ने कहा कि मैं बड़ी बहुत तकलीफ़ में हूँ। क्या तुम मुझ पर, मेरे पर एक एहसान करोगे। अगर तलवार के एक वार से मेरा ख़ातमा कर दो मगर देखना मेरी गर्दन ज़रा लंबी काटना कि जरनैल की निशानी यह होती है कि इस की गर्दन लंबी काटी जाती है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूव रज़ि ने इस की यह बात तो मान ली कि मुझे क़तल कर दो और इस दुख से बचा लो मगर उन्होंने ठोढ़ी के पास से इस की गर्दन को काटा। गोया मरते वक़्त उस की यह हसरत भी पूरी न हुई कि इस की गर्दन लंबी काटी जाए।

(उद्धरित तफ़सीर कबीर भाग 8 पृष्ठ 100-101)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने क़ुर्बानियों के अन्तर्गत में यह वर्णन, यह घटना वर्णन की है कि किस तरह बच्चों में भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इशक़ और मुहब्बत थी और किस तरह आप के दुश्मन से वे बदला लेना चाहते थे।

यह घटना पहले भी एक दो बार वर्णन हो चुकी है लेकिन बहरहाल ये क़ुर्बानियां थीं, ये मुहब्बत थी और उन सब का आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से यह इशक़ था जिसकी वजह से उनको अपनी जानों की पर्वा नहीं थी।

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि का बाक़ी वर्णन जो है इंशा अल्लाह बाद में करूँगा।

(अलफ़ज़ल इन्टरनैशनल 3 जुलाई 2020 ई पृष्ठ 5 से 9)

☆ ☆

☆

पृष्ठ 2 का शेष

और आपके बारे में और अधिक ज्ञान प्राप्त करूँ।

एक साहिब ने अपने विचारों का इज़्हार करते हुए कहा कि यह एक बहुत शानदार अवसर था। मुझे यहां बहुत कुछ सीखने को मिला है। ख़लीफ़ा ने बहुत अच्छे अंदाज़ में इस्लाम की सकारात्मक तस्वीर प्रस्तुत की है और ध्यान दिलाया है कि छोटे पैमाने पर काम कर के भी दुनिया के अमन में अपनी भूमिका अदा की जा सकती है। अफ़्रीक़ा में विभिन्न प्रोजेक्टों का आपने वर्णन किया है। मेरा भी विचार है कि संभव नहीं है कि हम हर स्थान ही अमन स्थापित कर दें लेकिन अगर हम में से प्रत्येक लोकल, रीजनल और नैशनल सतह पर अपनी-अपनी ज़िम्मेदारी ले-ले तो हम में बहुत बड़ा अन्तर पैदा कर सकते हैं। मर्दों औरतों, विभिन्न नस्लों, क़ौमीयतों के मध्य आपसी सम्मान और बर्दाश्त का माद्दा पैदा करने की ज़रूरत है। मैं नहीं जानता कि हम कैसे कामयाब होंगे क्योंकि दुनिया में बहुत सी ताक़तें अमन के ख़िलाफ़ काम कर रही हैं, लोगों को बांटना चाहती हैं। मेरे विचार में लोकल सतह पर प्रत्येक अपनी भूमिका अदा करने की कोशिश करे ताकि दुनिया में अमन हो।

Alexander साहिब इस आयोजन में आए थे उन्होंने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा कि ख़लीफ़ा ने अमन का पैग़ाम दिया और आपका ख़िताब सच्चाई पर आधारित था। आपने खुल कर और स्पष्ट बात की है। मुझे लगता है कि अहमदिया जमाअत ने ग़ुलामी के विषय को स्पष्ट किया है। यह पैग़ाम बहुत शानदार है। मुसलमानों में से अहमदियों ने यह पैग़ाम प्रस्तुत किया है जो कि एक छोटी सी जमाअत है। ख़लीफ़ा से मेरी मुलाक़ात भी हुई और ऐसा इन्सान हमें इस दुनिया में चाहिए। ख़लीफ़ा एक सम्मान्नीय इन्सान हैं और बहुत दोस्ताना तरीक़ा से मुझे मिले। मुझे तस्वीर बनाने की भा सौभाग्य मिला। यह मेरे लिए एक यादगार क्षण था।

एक मेहमान Mayine Onfray साहिब जो कि थिंक टैंक में काम करते हैं। उन्होंने अपने विचारों का इज़हार करते हु कहा UNESCO के लिहाज़ से ख़लीफ़ा की तक़रीर बहुत perfect थी। जो भी मेरे दिल की इच्छा थी कि आपके ख़लीफ़ा इस विषय पर बात करें ख़लीफ़ा ने उन्हीं विषयों पर बात की बल्कि उन्होंने बताया पुराने ज़माना में मुसलमानों की उच्च शिक्षा थी और बहुत से ज्ञानों को दुनिया में सिखाया और बहुत से उलूम के संस्थापक बने।

ख़लीफ़ा ने इस्लामी शिक्षा की दृष्टि से हमें समझाया कि हम अगली अपनी नस्लों के लिए किस तरह दुनिया को अच्छा छोड़कर जा सकते हैं। इस ख़िताब को ज़बरदस्त टाइटल के साथ प्रकाशित होना चाहिए।

एक मेहमान Bernard Goddard साहिब ने कहा: हमें TV पर इस्लाम के बारे में जो भी प्रापेगंडा नज़र आता है ख़लीफ़ ने इस से बिलकुल विभिन्न इस्लाम की शिक्षा प्रस्तुत की है और यही वास्तविक इस्लाम है। मैंने आज आंहुज़ूर सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में इलम प्राप्त किया है कि किस तरह मदीना में बहुत उच्च समाज स्थापित किया। मुझे आज पहली बार पता चला है कि इस्लाम ने इलम के मैदान में कितना बड़ा हिस्सा लिया और दुनिया को इलम दिया है।

महोदय और अधिक वर्णन करते हैं कि इस के अतिरिक्त ख़लीफ़ा साहिब की जो तक़रीर थी इस में अमन का पैग़ाम भी था जोकि क़ुरआन करीम और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मिसालों के साथ वर्णन किया गया। यह आज के दौर में निहायत लाभदायक है।

एक औरत Miss Danuta जो कि नान प्रॉफिट आर्गेनाईज़ेशन की डायरेक्टर हैं अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहती हैं: आपके ख़लीफ़ा ने बार-बार अपनी तक़रीर में शिक्षा के महत्त्व का ज़िक्र किया। मुझे यह बहुत ही प्यारी बात लगी कि ख़लीफ़ा ने किस हद तक शिक्षा पर ज़ोर डाला है। आप लोग लड़कियों को गोल्ड मैडल देते हैं जो उच्च शिक्षा प्राप्त करती हैं। मैं ख़ुद एक साएंटिस्ट हूँ। मेरे लिए यह बहुत हैरान करने वाली बात है कि एक धार्मिक लीडर साईंस को प्रोमोट करता है

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

जबकि धार्मिक लीडर्ज़ साईंस से दूर हैं।

एक मेहमान Alexander Vigne साहिब ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा: आपके ख़लीफ़ा की तक़रीर ज़बरदस्त थी जिसकी बुनियाद अमन पर थी। इस तक़रीर में उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि मुसलमान आसानी से पश्चिमी दुनिया में इंटीग्रेट हो सकते हैं और इस्लाम इन्सानी इक़दार को स्थापित करता है।

मैंने इन्सानियत के बारे में बहुत कुछ सीखा है और मैं हैरान हूँ कि आप लोग किस हद तक आगे बढ़कर इन्सानियत की सेवा कर रहे हैं। आप लोग अफ़्रीक़ा में शिक्षा और Health care ग़रीब लोगों तक पहुंचा रहे हैं और रंग तथा नस्ल, धर्म व मिल्लत के अन्तर के बिना इन्सानियत की सेवा कर रहे हैं।

Oumar Keita ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा ख़लीफ़ा एक ग़ैरमामूली शख़्सियत हैं। आप अमन फैला रहे हैं और आपका इल्म भी बहुत ही व्यापक है। मैं आपको आपके अमन के पैग़ाम की वजह से मुबारकबाद प्रस्तुत करता हूँ। UNESCO एक ऐसा ideal स्थान है जहां अमन की बात हो सकती है। आप तो एक ऐसी शख़्सियत हैं जो अमन से भरी पड़ी है और आज उम्मते मुस्लिमा को ऐसे ही लीडर की ज़रूरत है।

आज मैं एक ऐसे इन्सान के क़रीब था जो अमन और इन्साफ़ का आदमी है। यही वह इन्साफ़ है जिसकी आज ज़रूरत है जहां दहशतगर्दी ने हर तरफ़ अमन बर्बाद किया हुआ है।

09 अक्तूबर 2019 ई(दिनांक बुधवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह 6 बजकर45 मिनट पर मस्जिद मुबारक तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ विभिन्न दफ़्तरी मामलों को पूरा करने में व्यस्त रहे।

पैरिस से रवानगी और स्टरास बर्ग में तशरीफ लाना

आज प्रोग्राम के अनुसार जमाअत के मर्कज़ दारुस्सलाम Saint Prix (पैरिस से फ्रांस के पूर्वी हिस्सा में स्थित शहर Strasbourg के लिए रवानगी थी। यहां से स्टरासबर्ग का दूरी 513 किलोमीटर है

जमाअत के लोग मर्द तथा औरतें सुबह से ही हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ को विदा कहने के लिए मिशन हाऊस में जमा होने शुरू हो गए थे। प्रोग्राम के अनुसार12 बजकर 10 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह से बाहर तशरीफ़ लाए। हुज़ूर अनवर ने अपना हाथ ऊंचा कर के सब हाज़िरीन को अस्सलामो अलैकुम कहा और इज्तिमाई दुआ करवाई।

इस के बाद क़ाफ़िला स्ट्रॉसबर्ग के लिए रवाना हुआ। बहुत लम्बा सफ़र होने की वजह से रास्ता में रुक कर नमाज़ ज़ुहर तथा असर की अदायगी और दोपहर के खाने का प्रबन्ध किया गया था। प्रोग्राम के अनुसार165 किलोमीटर का सफ़र तय करने के बाद 2 बजकर 5 मिनट पर Chalons En Champgne ज़िला के क्षेत्र Reims मैं स्थित होटल'Les Crayeres" तशरीफ लाए। इस होटल के एक हाल में नमाज़ों की अदायगी का प्रबन्ध किया गया था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने 2 बज कर 30 मिनट पर इस हाल में तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर तथा असर जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी और दोपहर के खाने के बाद लगभग 3 बजकर 55 मिनट पर आगे सफ़र पर रवानगी हुई। अब यहां से स्टरास बर्ग का दूरी 348 किलोमीटर था। आगे निरन्तर सफ़र जारी रहा और शाम 7 बजकर 45 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का मस्जिद महदी स्टरास बर्ग में तशरीफ लाए। मस्जिद महदी और जमाअत का यह सैंटर स्ट्रॉसबर्ग केपास के क्षेत्र Hurtigheim मैं स्थित है

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ जैसे गाड़ी से बाहर तशरीफ़ लाए तो जमाअत के लोग मर्द औरतें और बच्चों बच्चियों ने बड़े वालहाना और पुरजोश अंदाज़ में अपने प्यारे आक़ा का स्वागत किया। आज यहां के लोगों के लिए इंतिहाई ख़ुशियों, आनन्द और बरकतों वाला दिन था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के मुबारक क़दम पहली बार उनकी सरज़मीन पर पड़े थे। प्रत्येक मर्द, औरत, छोटा बड़ा, नौजवान बूढ़ा ख़ुशी तथा प्रशन्नता से मामूर था यह एक ऐसा दिन था जो इस जमाअत में हमेशा याद रखा जाएगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के स्वागत और हुज़ूर को स्वागत कहने के लिए शहर की कौंसल के उप मेयर Claude Grimm और कैबनट के एक और मैंबर Suzy Piecko साहिब भी आए हुए थे। इन दोनों ने हुज़ूर अनवर को स्वागत कहा और बताया कि वह हफ़्ता वाले दिन के प्रोग्राम में भी आएँगे। हुज़ूर अनवर ने उनका यहां आने पर शुक्रिया अदा किया।

इसी तरह झंडाबरदार एसोसीएशन की सदर Denise Babylone भी अपनी एसोसीएशन के दो ऐसे रिटायर्ड फ़ौजी आफ़सरों के साथ हुज़ूर अनवर के स्वागत के लिए मौजूद थीं जिन्होंने अल-जज़ाइर की जंग लड़ी थी। हुज़ूर अनवर के पूछने पर महोदया ने निवेदन किया कि उनका सम्बन्ध केरला इण्डिया से है।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए। 8 बजकर 50 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद महदी तशरीफ़ लाकर नमाज़ मग़रिब इशा जमा कर के पढ़ाईं। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। यहां स्टरास बर्ग में हुज़ूर अनवर का निवास मस्जिद से जुड़े हुए रिहायशी हिस्सा में था।

स्ट्रॉसबर्ग का परिचय

स्ट्रॉसबर्ग शहर से जुड़े हुए क्षेत्र जहां मस्जिद महदी बनी हुई है। यह एक क़स्बा है जिसका नाम Hurtigheim है। यह क़स्बा प्रान्त Grand Est के ज़िला Bas Rhin मैं स्थित है और स्ट्रॉसबर्ग शहर से 13 किलोमीटर के दूरी पर है। प्रान्त Grand Est का पुराना नामAlsace है। इस क्षेत्र में फ्रांसीसी भाषा के अतिरिक्त स्थानीय ज़बान Alsacian भी बोली जाती है। इस क्षेत्र का एक मशहूर दरिया Rhin है जो फ्रांस और जर्मनी की सरहद पर बहता है।

स्टरास बर्ग के क्षेत्र में सबसे पहले अहमदी आदरणीय मुरीद अहमद साहिब1981 ई में जर्मनी से यहां आकर आबाद हुए थे। यहां नमाज़ का प्रबन्ध समय समय पर विभिन्न घरों में होता है। पिछले 20/25 साल से जमाअत इस क्षेत्र में मस्जिद और मिशन हाऊस के लिए स्थान ढूंढ रही थी लेकिन कामयाबी न होती थी। कोई न कोई रोक पड़जाती थी और कई बार कौंसल आज्ञा नहीं देती थी।

साल 2010 ई में जब सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने फ्रांस के एक सफ़र के दौरान स्ट्रॉसबर्ग तशरीफ़ लाए तो अल-जज़ा-इर के एक अहमदी दोस्त अब्दुल हलीम के घर भी गए। उन्होंने अपने घर की Basement मैं नमाज़ सैंटर बनाया हुआ था। हुज़ूर अनवर उस नमाज़ सैंटर में तशरीफ़ ले गए। जाए नमाज़ और किताबें पड़ी हुई थीं। हुज़ूर अनवर ने अमीर साहिब फ्रांस को सम्बोधित कर के फ़रमाया कि जब यहां मस्जिद बनेगी तब भी इस को नमाज़ सैंटर बनाए रखना है

मस्जिद महदी की बनाने और परिचय

स्टरास बर्ग शहर का दुनियावी महत्त्व भी है। यहां यूरोपीयन पार्लीमैंट, यूरोपीयन कौंसल, यूरोपियन इन्सानी अधिकार की अदालत है। यूरोप में यह शहर अपना स्थान रखता है। हुज़ूर अनवर ने यह शब्द फ़रमाए कि यहां एक मस्जिद बनाएँ तो अल्लाह तआला ने दो साल के अन्दर अन्दर ऐसे सामान पैदा कर दिए कि साल 2012 ई में जमाअत को यहां 2640 वर्ग मीटर पर आधारित एक ऐसी ज़मीन ख़रीदने की तौफ़ीक़ मिली जिस पर एक बड़ी इमारत पहले से बनी हुई थी। यह तीन मंज़िला इमारत15 कमरों पर आधारित है और इमारत के साथ एक बड़ा हाल भी था। यह स्थान 4 लाख 20 हज़ार यूरो में ख़रीदी गई। स्थान ख़रीदने के बाद कौंसल में काग़ज़ात की तैय्यारी और विभिन्न मामलों की पूर्णता और प्लैनिंग और नक़शों की मन्ज़ूरी के लिए कार्रवाई होती रही। अन्त में 6 जून 2016 ई को कौंसल की तरफ़ से मस्जिद बनाने की आज्ञा मिल गई। इसी वक़्त हुज़ूर अनवर की सेवा में सूचना दी गई। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया"ख़ुदा तआला आपको एक ख़ूबसूरत मस्जिद बनाने की तौफ़ीक़ दे।'

अत: अब जो मस्जिद बनाने हुई है इस में क़ानूनी तौर पर 250 लोगों के लिए नमाज़ पढ़ने का स्थान है। एक जमाअत का दफ़्तर और एक लजना का दफ़्तर भी है। एक लाइब्रेरी भी है। एक बड़ा मल्टी परपज़ हाल भी है। जिसको विभिन्न प्रोग्रामों में प्रयोग किया जा सकता है। अगर उसे नमाज़ के लिए प्रयोग किया जाए तो और 125 लोग आ सकते हैं। इसी तरह पहले वाली इमारत को जिस में 15 कमरे हैं। इसके एक

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

हिस्सा को दोबारा मुरम्मत कर के तैय्यार किया गया है।

मुरब्बी हाऊस के 4 कमरे, एक टायलट और एक बाथरूम है। इसके अतिरिक्त एक रिहायशी अपार्टमंट है। जिसमें पाँच कमरे (दो बेडरूम एक दफ़्तर, एक सेटिंग रुम, किचन, टायलट, बाथरूम हैं। इस के अतिरिक्त ग्रांऊड फ़्लोर पर 4 बेडरूम, एक दफ़्तर, बाथरूम और टायलट बनाए गए हैं।

मस्जिद में 6 बाथरूम और वुज़ू करने के लिए स्थान भी हैं। चार कोनों वाला एक मीनार मस्जिद के दाएं हिस्सा में बनाया गया है। जिसकी ऊंचाई आठ मीटर है और इस पर एक छोटा सा गुंबद भी रखा गया है। इस मस्जिद को बनाने में बड़ी बहुत बड़ी संख्या में वक़ार अमल किया गया। आरकेटिकट ने एक मिलियन यूरो का अंदज़ा दिया था जबकि वक़ार अमल के द्वारा बहुत बचत हुई और इस मस्जिद बनाने 5 लाख 30 हज़ार यूरो में पूर्ण हुई।

इस मस्जिद की ज़मीन एक कोने का प्लाट है और दो तराफ़ सड़कें हैं और इर्दगिर्द का क्षेत्र एक खुला क्षेत्र है और खेत हैं। जिसके कारण विभिन्न तरफ़ों से आने वालों को इस मस्जिद की इमारत दूर से नज़र आती है। यह मस्जिद इंशा अल्लाह अज़ीज़ इस क्षेत्र में हिदायत का रोशन मीनार साबित होगी।

10 अक्तूबर 2019 ई(दिनांक जुम्मेरात)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह 6:30 बजे मस्जिद महदी में तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ फ़ज्र के बाद हुज़ूर अनवर अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की विभिन्न दफ़्तरी मामलों के पूरा करने में व्यस्तता रही।

सवा दो बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद महदी तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर तथा असर जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए। पिछले-पहर भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की दफ़्तरी मामलों के पूरा करने में व्यस्तता रही।

फ़ैमिली मुलाक़ातें और लोगों के विचारों

प्रोग्राम के अनुसार सवा 6 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और फ़ैमिलीज़ मुलाक़ातें शुरू हुईं। आज शाम के इस सैशन में 33 फ़ैमिलीज़ के120 लोगों ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। मुलाक़ात कारने वाली फ़ैमिलीज़ स्टरास बर्ग की जमाअत से सम्बन्ध रखती थीं। इन सभी ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दया करते हुए शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को क़लम प्रदान फरमाए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फरमाए। उनमें कई लोगों और फ़ैमिलीज़ की मुलाक़ात बहुत लंबे समय के बाद हुई। मुलाक़ात कारने वाले यह सभी दोस्त अपने प्यारे आक़ा के क़ुरब और दीदार से प्रसन्न हुए।

एक दोस्त ने निवेदन किया कि मेरी मुलाक़ात हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से 10 साल बाद हुई है। हुज़ूर अनवर ने बड़ी शफ़क़त के साथ हमारा हाथ पकड़ा। हमारे लिए दुआ की और तस्वीर का अवसर दिया 10 साल के बाद दिल हल्का महसूस हो रहा है कि इतने समय बाद हमें यह सौभाग्य नसीब हुआ है और प्यारे आक़ा से मुलाक़ात की घड़ी नसीब हुई है और दिल को शान्ति मिली है।

एक दोस्त ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए बताया कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से हमारी मुलाक़ात 11 साल के बाद हुई। इस से पहले 2008 ई में मुलाक़ात हुई थी, जब हुज़ूर फ़्रांस आए थे। पहले तो हमारी मुलाक़ात हो नहीं रही थी और हमें ही पता है कि हम पर क्या बीत रही थी। यहां पर जब हमें मुलाक़ात का सौभाग्य नसीब हुई है वह हम वर्णन नहीं कर सकते हुज़ूर से मिलकर बहुत ख़ुशी हो रही है। ऐसा लगता है कि लोग परवानों की तरह शम्मा पर इकट्ठे हो गए हैं। प्रत्येक की इच्छा है कि प्यारे आक़ा को मिले और अपने आक़ा के निकट रहे। जो दूसरे लोग हैं वे इस नेअमत से दूर हैं अल्लाह तआला उन लोगों के दिल मोड़ दे और उनको ख़िलाफ़त की छायों तले ले आए।

एक दोस्त ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए बताया कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात की दिली भावनाएँ वर्णन से बाहर हैं। ग्यारह साल बाद प्यारे आक़ा आए हैं और वे दिन ऐसे गुज़रे हैं कि पता नहीं चला। मुहब्बत का एक एहसास रहा है जो कि अब भी हमें ठण्डक दे रहा है। प्यारे आक़ा का नूर वाला चेहरा देखकर ऐसी कैफ़ीयत होती है कि जो बातें दिल में होती हैं वे भूल जाती हैं और याद नहीं आतीं। जब भी मुलाक़ात होती है ऐसे लगता है नई मुलाक़ात है।

एक दोस्त ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए बताया कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ को देखकर महसूस हुआ कि ख़ुदा का प्रतिनिधि ज़मीन में घूम रहा है और हम अपनी ख़ुशी वर्णन नहीं कर सकते। बच्चों को प्यार मिला, दुआएं मिलीं और हमें दुनिया में क्या चाहिए। हुज़ूर अनवर का फ़्रांस आना दरअसल अल्लाह-तआला की तरफ़ से फ़्रांस के लिए बहुत फ़ज़ल और बरकत का कारण है। मैं मस्जिद कमेटी का भी मैंबर हूँ, मैंने यह बात हुज़ूर अनवर को भी बताई तो हुज़ूर अनवर ने मुझे फ़रमाया कि मैंने आपका नाम लिया था, आप तो नासिर हैं, मैंने कहा जी हुज़ूर जब मैं मस्जिद बना रहा था तो मैं ख़ादिम था अब नासिर हूँ। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जाओ एक और मस्जिद बनाओ। मैंने कहा हुज़ूर आपने फ़र्मा दिया है इन्शा अल्लाह तआला तीन साल के अंदर अंदर मस्जिद बन जाएगी। मेरे ज़िम्मा दीवारें खड़ी करना, फ़र्श का काम, बाथ और टायलट और रंग का काम था।

एक दोस्त ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए बताया कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मेरी यह पहली बार मुलाक़ात थी। जब मैंने प्यारे आक़ा को बताया कि मैं रब्वह से हूँ तो मेरी आँखों में आँसू आ गए और मैं अपनी यह कैफ़ीयत शब्दों में वर्णन नहीं कर सकता फिर हुज़ूर अनवर ने मेरे बड़े बेटे का हाथ पकड़ लिया और उसे प्यार किया। जब मैं मुलाक़ात कर के निकला हूँ तो मेरा दिल कर रहा था कि मैं पूरी दुनिया को बताऊं कि मेरी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से मुलाक़ात हो गई है। पाकिस्तान के लोग तो तड़पते हैं कि किस तरह हम हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात कार सकें। पाकिस्तान में जब मैंने दोस्तों को बताया तो वे कहते हैं कि हमारे लिए दुआ करो कि हम वहां आकर हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त कर सकें या हुज़ूर अनवर किसी तरह पाकिस्तान तशरीफ़ ले आएं।

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम 8 बजकर 15 मिनट तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद महदी में तशरीफ़ ला कर नमाज़ मग़रिब इशा जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

11 अक्तूबर 2019 ई(दिनांक जुम्अ:)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह 6 बजकर 30 मिनट पर मस्जिद महदी (Hurtigheim) में तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ दफ़्तरी मामलों की पूरा करने में व्यस्त रहे। आज जुमअतुल मुबारक का दिन था। जुमअतुल मुबारक के साथ ही मस्जिद महदी का उद्घाटन भी हो रहा था। फ़्रांस की विभिन्न जमाअतों से जमाअत के लोग सुबह से ही मस्जिद महदी पहुंचना शुरू हो गए थे। प्रत्येक की इच्छा थी कि अपने प्यारे आक़ा के अनुकरण में नमाज़ जुम्अ: अदा करने का सौभाग्य पाए और मस्जिद के उद्घाटन में भी शामिल हो।

मस्जिद महदी का उद्घाटन

नमाज़ जुम्अ: पर जर्मनी, स्विटज़रलैंड, बलजीम, पुर्तगाल, यू.के, तीवनस, मराक़श, अल्जीरिया, घाना, सेनेगाल, मारीशस, माली, जज़ाइर कमोरोज़, तुर्की, गिनी बसाऊ और वेयतनाम से सम्बन्ध रखने वाले लोग मौजूद थे। प्रोग्राम के अनुसार 2 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ तशरीफ़ लाए और मस्जिद की

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

भीतरी दीवार में लगी तख़्ती की निक़ाब कुशाई फ़रमाई। इस के बाद हुज़ूर अनवर ने मस्जिद में तशरीफ़ ला कर ख़ुतबा जुम्अ: इरशाद फ़रमाया। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ जुम्अ: के साथ नमाज़ अस्र जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

प्रैस कान्फ्रैंस

प्रोग्राम के अनुसार 4 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए। जहां प्रैस कान्फ्रैंस का आयोजन हुआ। DNA यहां का एक स्थानीय अख़बार है और इस सूबे का सबसे बड़ा अख़बार है। इस की रोज़ाना की इशाअत एक लाख 50 हज़ार है। इस अख़बार की प्रतिनिधि जर्नलिस्ट आई हुई थी। इसी तरह यहां के स्थानीय रेडीयो France Bleu की प्रतिनिधि जर्नलिस्ट भी मौजूद थे यह यहां स्थानीय सतह पर समस्त इन्फ़ार्मेशन की इशाअत करते हैं। यह रेडियो यहां बहुत अधिक सुना जाता है

रेडियो France Bleu के जर्नलिस्ट ने सवाल किया कि इस स्थान पर मस्जिद बनाने का फ़ैसला किया गया है जहां इतनी आबादी नहीं है। इस का क्या कारण है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने इस का जवाब देते हुए फ़रमाया कि बात यह है कि यहां जमाअत वाले विभिन्न स्थान तलाश कर रहे थे लेकिन कामयाबी नहीं हो रही थी। इसलिए यहां outskirts मैं निकले हैं और यह स्थान ले लिया है। इसकी एक वजह तो यह है कि हमारे संसाधन बहुत सीमित हैं। हम कोई Oil Rich Country की ऐड से तो प्रोजेक्ट्स नहीं बनाते। हम तो मैंबर उनके चन्दों से बनाते हैं। तो अपने संसाधन के अंदर रहते हुए हमें यह अच्छा स्थान मिल गया इसलिए हम ने ले ली है।

दूसरी वजह यह है कि आजकल लोगों के पास संसाधन हैं। ट्रांसपोर्ट है। कारें हैं। मैंने देखा है कि यहां से बसें भी गुज़रती हैं, लोग आराम से यहां आ भी सकते हैं। लेकिन जब हमने लंदन मस्जिद बनाई थी उस वक़्त तो बिलकुल जंगल में थी, लंदन से बहुत बाहर थी। आठ दस मील बाहर थी। इस वक़्त के इमाम ने लिखा कि क्षेत्र बहुत दूर है, यहां तो लोग नहीं आएँगे। इस अवसर पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि ने कहा था कि लंदन वहां पहुंच जाएगा। तो हमें भी उम्मीद है कि स्टरास बर्ग यहां भी पहुंच जाएगा।

यह1924 ई की बात है, इस वक़्त तो संसाधन भी नहीं थे और लंदन में अहमदी भी कुछ एक थे। यहां तो अब अल्लाह के फ़ज़ल से कई सौ अहमदी हैं और संसाधन भी हैं। इसलिए हमें अच्छे की उम्मीद रखनी चाहिए। जहां मस्जिद बनाई गई थी वह अब लंदन का एक हिस्सा है।

इसी जर्नलिस्ट ने सवाल किया कि आप लोगों का इर्दगिर्द रहने वाले पड़ोसियों के साथ कैसा रवैय्या होगा? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि पड़ोसियों के बारे में हमारी शिक्षा तो बहुत स्पष्ट है। मुझे उम्मीद है कि यहां के अहमदी यही रवैय्या अपनाएंगे। इस्लामी शिक्षा में पड़ोसी को बहुत हक़ दिया गया आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि पड़ोसी के अधिकार के हवाला से अल्लाह तआला ने इतनी बार नसीहत की कि मुझे विचार पैदा हुआ कि शायद उस का विरासत में भी हिस्सा बन जाए।

इसी जर्नलिस्ट ने अपना तीसरा सवाल किया कि आप लोगों का इर्दगिर्द की दूसरी मस्जिदों से डायलॉग ठीक है या नहीं?इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि हम तो चाहते हैं प्रत्येक से ठीक रखना और हम तो मुसलमानों को भी और ईसाईयों को भी खुली दावत देते हैं कि आओ हमारे साथ बैठो, मस्जिद में भी आओ, डायलॉग करो, बातचीत करो और आपस में हम मिलकर एंटर फ़ेथ प्रोग्राम करें। हमारी तरफ़ से तो कोई रोक नहीं है। लेकिन कई अन्य उल्मा और मौलवी हैं जो बहुत origid होते हैं। वे कई बार नहीं करते। लेकिन कई शरीफ़ भी हैं, आते हैं। पैरिस में मुस्लिम कौंसिल का उप सदर मिलने आया था। तो हमारे तो प्रत्येक के लिए दरवाज़े खुले हैं।

इस के बाद DNA अख़बार की औरत जर्नलिस्ट ने सवाल किया कि इंटीग्रेशन के हवाला से आपकी राय किया है? हमारे इलम में दो किस्म की मस्जिदें हैं, एक इबादत करने के लिए और दूसरी सभ्यता को बढ़ावा देने के लिए। आप लोग किस किस्म का काम करेंगे? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि मस्जिद का प्रमुख हाल तो केवल इबादत के लिए होता है, यहां केवल इबादत होती है। इसलिए हम साथ एक मल्टी परपज़ हाल बनाते हैं। इस का उद्देश्य यह होता है कि हमारे कई अन्य प्रोग्राम भी होते हैं जो कि मस्जिद में नहीं हो सकते। जैसे खाने पीने के प्रोग्राम जो कि मस्जिद के हाल में नहीं हो सकते। मस्जिद का तो एक तक़द्दुस है, इस का विचार रखना चाहिए , अल्लाह तआला ने जो मस्जिद का उद्देश्य वर्णन फ़रमाया है वह इबादत है। मस्जिद का उद्देश्य एक ख़ुदा की इबादत है, चाहे कोई किसी भी धर्म से सम्बन्ध रखता हो। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नजरान के ईसाईयों को मस्जिद नबवी में इबादत करने का स्थान दे दिया था। तो एक ख़ुदा की इबादत करनी है तो हमारी मस्जिदें प्रत्येक के लिए खुली हैं जो चाहे आए।

इसी औरत ने सवाल किया कि इस क्षेत्र में आप लोगों की जमाअत कितनी बड़ी है?इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि फ्रांस में अहमदियों की संख्या बहुत थोड़ी है। इस लिहाज़ से यहां एक reasonable कम्यूनिटी है।

इसी औरत जर्नलिस्ट ने सवाल किया कि क्या इस ज़मीन में आप लोगों का कोई और मस्जिद बनाने का प्रोजेक्ट है?हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि हमारे प्रोजेक्ट अहमदियों की ज़रूरत के अनुसार बनते हैं। फ़िलहाल तो यहां अहमदियों की संख्या के अनुसार यह मस्जिद काफ़ी है। लेकिन आज ही मैंने उन्हें एक और मस्जिद बनाने का कहा है। अब देखें कि कहाँ ज़रूरत है, जहां अधिक लोग हैं, ताकि उनको अपने क्षेत्र में एक मर्कज़ मिल जाए, जहां वे लोग इकट्ठे हो कर नमाज़ें भी पढ़ सकें और अन्य प्रोग्राम भी कर सकें। तो हम देखेंगे कि जिस स्थान पर जमाअत के मैंबरों की संख्या अधिक है, वहां बनाएंगे, चाहे वे इस रीजन में हो या किसी और प्रान्त में हो।

इस प्रैस पत्रकार औरत ने निवेदन किया कि उसका मतलब तो यह है कि इस रीजन में काफ़ी अहमदी थे। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि हाँ, काफ़ी संख्या में थे और मुख़लिस थे और वे चाहते थे कि मस्जिद बने। क्योंकि यह पैरिस से काफ़ी दूर है। इसलिए यहां मस्जिद होनी चाहिए ताकि कोई सैंटर बने। ताकि इस क्षेत्र के लोगों को भी पता चले कि वास्तविक इस्लाम क्या है, हम किस तरह एक ख़ुदा की इबादत करते हुए उस की मख़लूक़ का भी हक़ अदा करने वाले हैं।

उसने और अधिक सवाल किया कि इस से पहले आप लोग कहाँ नमाज़ पढ़ते थे? इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि इस से पहले एक घर में सैंटर बनाया हुआ था वहां पर नमाज़ पढ़ते थे।

इस औरत ने और अधिक सवाल करते हुए कहा कि यहां सिर्फ स्टरास बर्ग से ही आने वाले हैं या इर्दगिर्द के दूसरे देहात से भी आएँगे? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि क़रीब तो स्टरास बर्ग वाले ही हैं। लेकिन और भी जो क़रीब रहने वाले, या इर्द-गिर्द के इलाक़ों वाले या अन्य देहात वाले हैं, वे लोग भी आ सकते हैं। जहां तक लोगों को यहां की पहुंच है उसका catch-ment क्षेत्र है

और अधिक हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: लंदन में मुसलमानों की संख्या काफ़ी है। वहां हमारी शहर के अंदर भी मस्जिदें हैं। तो हमारी मस्जिदों में क़रीब रहने वाले दूसरे

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 16 July 2020 Issue No.29

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

मुसलमान भी नमाज़ पढ़ने या जुम्अ: पढ़ने आ जाते हैं।

इसी पत्रकार ने सवाल करते हुए कहा कि अहमदियत की फ़िलासफ़ी क्या है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि हम इस्लाम धर्म पर यक़ीन रखने वाले हैं जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लेकर आए थे। और इस धर्म का सार यह है कि समस्त ताक़तों का मालिक एक ख़ुदा है, आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को आख़िरी शरई नबी समझना, आप के बाद कोई नई शरीयत नहीं आ सकती और क़ुरआन करीम को आख़िरी शरीयत की किताब समझना और जो इस में हुक्म दिए गए हैं, जिसमें अल्लाह तआला के अधिकार अदा करने के बारे में और इस की सृष्टि के अधिकार अदा करने के बारे में आदेश शामिल हैं, इन समस्त पर अनुकरण करना।

और इस के साथ इस बात पर भी यक़ीन रखना कि अल्लाह तआला ने हर क़ौम में नबी भेजे हैं और हम प्रत्येक नबी पर ईमान लाते हैं। क़ुरआन करीम में अल्लाह तआला ने लिखा है कि अल्लाह तआला ने हर क़ौम में नबी भेजा है। हम हर नबी पर यक़ीन रखते हैं और उन पर अल्लाह तआला ने कई शरीयतें नाज़िल की हैं। हम इन किताबों पर भी ईमान लाते हैं, अगर यह वास्तविक शक्ल में मौजूद हैं

हम यह भी यक़ीन रखते हैं कि मरने के बाद एक अगली दुनिया का आरम्भ होता है, जहां पर पूछताछ होगी। नेक काम करने वालों को अल्लाह तआला इनाम देता है और बुरे काम करने वालों को सज़ा देता है। और इस पर भी यक़ीन रखते हैं कि एक वक़्त आएगा कि अल्लाह तआला समस्त सज़ा पाने वालों को भी माफ़ कर देगा और एक स्थान जन्नत में इकट्ठा कर देगा

इसी औरत जर्नलिस्ट ने पूछा कि क्या मैं दो सवाल कर सकती हूँ। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने आज्ञा प्रदान फ़रमाई।

इस औरत ने सवाल किया कि क्या आप लोग समस्त यूरोप में इसलिए मस्जिदें बना रहे हैं कि अन्य देशों में आप लोगों पर जो अत्याचार हो रहे हैं, उनकी तरफ़ ध्यान दिलाएँ? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि हम मस्जिदें सिर्फ़ दिखाने के लिए नहीं बना रहे। हम तो इस स्थान में बना रहे हैं जहां हमारी जमाअत के लोग मौजूद हैं और इसलिए कि इबादत के लिए उनके पास एक स्थान होना चाहिए। ताकि एक स्थान में जमा हो सकें और साथ ही अपने अन्य प्रोग्राम कर सकें। फिर इसके साथ साथ जब मस्जिद बनती है तो लोगों को इस्लाम की वास्तविक शिक्षा का भी पता चल जाता है। बाक़ी प्रसीकेशन से तो इस का कोई सम्बन्ध नहीं है। हाँ हम यह यक़ीन रखते हैं हमें जितना भी दबाया जाता है इतना ही अल्लाह तआला हम पर फ़ज़ल करता है। अगर हमारी एक मस्जिद छिन्ती है तो अल्लाह तआला हमें दस मस्जिदें दे देता है।

आज भी मैंने यही कहा है कि मस्जिदें बनाने का कोई लाभ नहीं है अगर हम इबादत का हक़ अदा नहीं करते और इस की सृष्टि का हक़ अदा नहीं करते। सिर्फ लोगों को दिखाना तो उद्देश्य नहीं है बल्कि इस मस्जिद को आबाद करना इसलिए कि अल्लाह तआला की इबादत की जाए और मंसूबा बंदी और प्लैनिंग कर के उसकी मख़लूक़ का हक़ अदा किया जाए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अफ्रीक़ा में हम सैंकड़ों मस्जिदें बनाते हैं और साथ ही वहां सोशल वर्क बहुत अधिक कर रहे हैं। लोगों को पानी देना, बिजली उपलब्ध करना, एजूकेशन देना, हैल्थ केअर देना। हमारे सारे काम चल रहे हैं। सिर्फ अहमदियों को ही उपलब्ध नहीं करते, बल्कि 80 फ़ीसद से अधिक उन प्रोजेक्ट्स से ग़ैर अहमदी लाभ उठाते हैं। लेकिन चूँकि वहां अहमदियों की संख्या अधिक है, इसलिए वहां मस्जिदें भी बन रही हैं।

दूसरा सवाल करते हुए इस औरत ने कहा कि आपने मल्टी परपज़ हाल का ज़िक्र किया है इस में दूसरी कम्यूनिटीज़ के भी प्रोग्राम हो सकते हैं? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि दूसरी कम्योनीटीज़ के भी प्रोग्राम होते हैं। एजूकेशनल प्रोग्राम भी होते हैं दूसरे प्रोग्राम भी होते हैं, इंडोर गेम्ज़ का भी हमारा प्रबन्ध होता है। इर्दगिर्द के दूसरे लोग भी आते हैं और खेलते हैं। कई स्थान ऐसा होता है, यहां भी ऐसा होगा, उस का प्रयोग कर रहे हैं।

और अधिक हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया यू के में तो कई चैरिटीज़ और कई सिया-स्तदान भी आकर प्रोग्राम कर लेते हैं।

पृष्ठ 1 का शेष

कि उसे मलऊन क़रार दिया और तीन दिन हाविया में रखा। ऐसी हालत में अगर गुनाहों के बदले सज़ा हो तो फिर कफ़्फ़ारा का क्या लाभ हुआ? नियम कफ़्फ़ारा ही चाहता है कि गुनाह क्या जाए। यह क़ायदा की बात है कि नियम का असर बहुत पड़ता है। देखो! हिन्दुओं के नज़दीक गाय बहुत पवित्र और सम्मान योग्य है और इस का प्रभाव उन में इस सीमा तक है कि इस का पेशाब और गोबर भी पवित्र और पवित्र करने वाला उन में क़रार दिया गया है और गाय के बारे में इस क़दर जोश उनमें है जिसकी कुछ भी हद नहीं। यही कारण है कि यह बात उन में बतौर उसोल दाख़िल किया गया है। याद रखो। नियम माँ के रूप में होते हैं और कर्म बतौर औलाद के। जब मसीह कफ़्फ़ारा हो गया है और उसने समस्त गुनाह ईमान लाने वालों के उठा लिए फिर क्या कारण है कि गुनाह न किए जाएं? आश्चर्य की बात है कि ईसाई जब कफ़्फ़ारा का नियम वर्णन करते हैं तो अपनी तक़रीर को ख़ुदा तआला के रहम और अदल से शुरू किया करते हैं मगर मैं पूछता हूँ कि जब ज़ैद के बदले फांसी बकर को मिली तो यह कौन सा इन्साफ़ और रहम है। जब यह नियम क़रार दे दिया कि सब गुनाह इस ने उठा लिए और बिना पैदा होने के भी गुनाह उठा लिए फिर गुनाह न करने के लिए कौन सी बात रोक हो सकती है। अगर यह हिदायत होती कि इस वक़्त के ईसाईयों के लिए कफ़्फ़ारा हुए हैं तो यह और बात थी मगर जब यह मान लिया गया है कि क़यामत तक पैदा होने वालों के गुनाहों की गठड़ी यसू उठा कर ले गया और उसने सज़ा भी उठा ली। फिर गुनहगार को पकड़ना किस क़दर ज़ुलम है। पहले तो बेगुनाह को गुनहगार के बदले सज़ा देना ही ज़ुलम है और फिर दूसरा ज़ुलम यह है कि अव्वल गुनाहगारों के गुनाहों की गठड़ी यसू के सिर पर रख दी और गुनाहगारों को खुशख़बरी सुना दी कि तुम्हारे गुनाह उस ने उठा लिए और फिर वह गुनाह करें तो पकड़े जाएं। यह अजीब धोखा है जिसका जवाब ईसाई कभी कुछ नहीं दे सकेंगे।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 160 से 162 प्रकाशन 2008 कादियान)

☆ ☆
☆

इस औरत ने निवेदन की कि एक आख़िरी सवाल कर सकती हूँ? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मुस्कुराते हुए फ़रमाया कि चलो आख़री कर लो।

उसने निवेदन की कि अभी हाल ही में जो फ्रांस में पुलिस वालों को चाक़ू से मारा गया है, इस पर आप की प्रतिक्रया चाहती हूँ। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि एक तो यह है कि वह जो मारने वाला था, कोई मुसलमान तो था नहीं। वह तो उस के डिपार्टमैंट का ही आदमी था। इस को मुसलमान हुए एक साल हुआ था और वह भी शादी की वजह से हुआ था। जो भी उसने किया है, ग़लत किया है। चाहे वह पुलिस वाले को मारे या किसी शहरी को मारे। जिसने भी किया ग़लत काम किया है। क़ानून अपने हाथ में लेने की इस्लाम सख़्त मनाही करता है। इस्लाम ऐसे अत्याचार के ख़िलाफ़ है। ऐसा नहीं होना चाहिए। हमारी हमदर्दीयां उनके साथ हैं, इन फ़ैमिलीज़ के साथ हैं। और हमने इन प्रभावित फ़ैमिलीज़ से इज़हार हमदर्दी भी किया था।

और अधिक हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: क़ुरआन करीम में लिखा हुआ है कि इस तरह बिना वजह के क़ानून हाथ में लेकर किसी का क़तल करना ऐसा ही है जैसे पूरी इन्सानियत का क़तल कर दिया गया

यह प्रैस कान्फ्रैंस लगभग 20 मिनट तक जारी रही। इस के बाद हुज़ूर अनवर अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

(शेष.....)

☆ ☆
☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad